





# अक्षरो का विद्रोह

रामदेव आचार्य

प्राप्तयन  
पालकृष्ण राव

कृती प्रकाशन  
कृचीलपुरा, बोकानेर  
( राजस्थान )



# प्रक्षरों का विद्रोह

प्रथम सम्स्करण अगस्त 1968

प्रकाशक इना प्रकाशन  
कपीतपुरा पोखाना

मुद्रक ए. सुभाषनन प्रेम  
पोखाना

मूल्य 500

[ प्रकाशक द्वारा मूल्य ]

## प्राक्कथन



ठीक म तीस वष हुए जब एक दिन मेरे प्रथम कविता मबलन कौमुदी का प्राक्कथन डाक स आया था । मैंने बटे उत्साह से निफाफा खाना और पटना गुरू करने से पहन प्राक्कथन का आसार देगकर बसदा अन्तज करन की कोशिश की कि उमक तिए कितने पृष्ठा की आवश्यकता पड़ेगी । पुस्तक छप चुकी थी नैवन वनी एक फर्मा गेप था जिमम प्राक्कथन को होना था । पन्ति न्याम बिहारी मिथ प्राक्कथन निखना स्वीकार चुक थ उह डरते डरते दो स्मरण पत्र भेज चुका था और अत में विवग होकर, स्वीभकर एक फर्मा रोककर गप पुस्तक छपा डानी थी । जो फर्मा रोक था उसम भी कुछ पृष्ठ अथ उपयोगाय आरंभित थे, अन्तज स कुछ पृष्ठ प्राक्कथन क लिए छाटे थे । भाग्य मे प्राक्कथन उन छूटी हुई जगह स कुछ कम म ही आ गया इस कारण कुगन हुई । बढ जाता तो मश्किल होती ।

मही जानता इस प्राक्कथन की स्थिति क्या है । जसे मैंने म तीस वष पूव रावराजा रायबहादुर पंडित न्यामबिहारी जी मिथ क प्राक्कथन की प्रतीणा की थी बस ही रामदेव जी भी कर रहे होंगे । मैंने अपनी पुस्तक छपा डाली थी बेशक एक फर्मा रोक रखा था । उन्होंने भी अपनी पुस्तक छपा डानी है और नायद एक फर्मा रोक रखा है । आगा धरता ह कि जसे पंडित न्यामबिहारी जी मिथ के प्राक्कथन को उपनय पृष्ठों मे सपान म भुन्के कोई त्किन्न नही हुई कम ही रामदेव जी को भी न होगा । अस्तु ।

पर यह साम्य यर्मा तक है । अपनी पुस्तक का प्राक्कथन तिलने के तिए मैंन पंडित न्यामबिहारी मिथ को नहीं चुना था, न

लिखने के लिए उनसे निवेदन करने वाला ही मैं था। मिश्र जी मेरे पिताजी के मित्र थे उनके अनुरोध पर उन्होंने लिखना स्वीकार किया। यहाँ बान बिल्कुल भिन्न है। प्रथम जैसे अपनी जगह रामदेवजी प्राक्कथन लखक के रूप में मुझे चुनने के लिए उत्तरदायी हैं—भले ही सिर्फ अपने प्रति उत्तरदायी हो—वैसे ही उनका अनुरोध मानने का दायित्व मुझ पर है। मैं यह कहकर छुट्टी नहीं पा सकता कि मेरे मित्र का अनुरोध था टाल कैसे सकता था? यह तो एक ऐसे व्यक्ति का अनुरोध था जिस मैंने देखा तक नहीं था जिससे मेरा परिचय केवल पत्रों लखो और कविताओं तक ही सीमित था। यही नहीं प्राक्कथन लिखना स्वीकारते समय मैं यह भी नहीं कह सकता था कि मैंने उनकी लिखी कविताएँ पढ़ी हैं कि विश्वासपूर्वक उनके सम्बन्ध में कुछ कह सकता हूँ। वतना भी नहीं था। तब तक तो बहुत थोड़ी-सी रचनाएँ ही देखी थी विश्वासपूर्वक कुछ भी कह सकने की स्थिति में नहीं था। फिर भी मैंने रामदेव जी का अनुरोध स्वीकार किया तुरत पहला पत्र पाठ ही आसानी से स्वीकार कर लिया। क्या?

यह एक स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक प्रश्न है क्योंकि प्राक्कथन लखक प्रथम आलोचक की स्थिति में होता है उसे अपने दायित्व का बोध का प्रमाण देना ही चाहिए। सतीस वर्ष पढ़न गायन इस क्यों के उत्तर में यह कहना ही काफी होता कि भाई क्या करता? बेचारे न वतना इमरार भरा पत्र लिखा था कि स्वीकार नहीं कर सका मगर आज यह कहना बेमानी होगा। इसलिए मैं खुद अपने से यह सवाल पूछता हूँ कि मैंने इतने स्वल्प परिचय के आधार पर प्राक्कथन लिखना क्यों मजूर किया? रामदेव जी की जिनगी भी कविताएँ मैंने तबतक देखी थी उनसे आवृत्त हुआ था या धारणाएँ या कवन मरिच्य की समावनाओं के विषय में आगावान? हम रूप में हम प्रश्न का उत्तर देने की प्रक्रिया ही हम सधु का प्राक्कथन बन जाय यहाँ हम प्रश्न की भी सायकना होगा और हम प्राक्कथन का भी।

रामदेव जी की कविताओं में अपनी घोर मेरा ध्यान नीला था। ध्यान कवन सौन्दर्य में अपना आर मीच सकता हो एगो बान

नहीं है। बहुधा हम उसकी ओर भी बरबस आकृष्ट हो जाते हैं जो  
 सबया अमुदर है अप्रीतिकर है। ध्यान प्राकृतिक करन वाला गुण  
 या तत्त्व वास्तव में विनम्रता या प्रमाधारणता है। इसी कारण  
 हमारी दृष्टि अत्यंत सुदूर की ओर भी जाती है और अत्यंत अमुदर  
 का ओर भी—भले ही हम अत्यंत सुदूर को बार-बार देखने की  
 कोशिश करें और अत्यंत अमुदर की ओर से आर्थे जबदस्ती हटालें।  
 दोनों की समानता दोनों की असामान्यता में है इसी कारण दोनों  
 आकृष्ट करते हैं। रामदेव जी की कविता में मुझे प्राकृतिक करने  
 वाला तत्त्व मिला और वह तत्त्व या गुण उसकी प्रमाधारण साधार  
 णता में भवकता था। आज कविता में ऐसी सहजता साधारणता  
 अकृत्रिमता अनभ्य है। चाहे वह हमारा अभिजात्य का मोह हो  
 चाहे सहसा प्रप्रत्यागित प्राचरण से चौंकाकर आकृष्ट करने का  
 मोह हो चाहे जो भी कारण हा हम कृत्रिमता और अनकरण की  
 परंपरागत अवधारणाओं के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊंचा करके  
 अपनी अवलोकन ही अनावृत भाषा और शली की दुहाई देते हैं पर  
 स्वयं एक नयी कृत्रिमता के जनक और पोषक हो गये हैं। हमारी  
 कविता रीति हुई राहों की छोड़कर नयी-नयी राहें ढूँढने निकालन  
 के प्रयास में यही भुला बठी है कि राह ढूँढने के लिए ही नहीं हाती उस  
 पर चला भी जाता है चकराकर आग बरग भी जाना है कहीं पहुँचा  
 भा जाता है। भीड़ छोड़कर एकांत की तलाश में अकल्पन की खोज  
 में भागने वाले बन्त हो गये हर गीते में तनहाई तनगाने वालों का  
 हुजूम इकट्ठा हो गया। नतीजा यह हुआ कि जिन्हें अपने अकल्पन  
 का सबसे ज्यादा एहसास है उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ है अकेले वे  
 हैं जो न अकल्पन का नामी हैं न महात्त अकल्पन का जो या नो  
 एहसास ही नहीं करत या यह मानते हैं कि हम क्षण के भव ही  
 अकेले हों अकिन्तु यत् सिद्धि धारण है वे भीड़ के हैं भीड़ के ही  
 रसम आज नहीं तो कल कल नहीं तो परमों भीड़ उन्हें और वे  
 भीड़ को फिर पा जायेंगे। यही उनकी नियति है यही अस्तित्व की  
 साधकता है।

रामदेव आचार्य इही लोगों में हैं। इन्हें भीड़ से दूर नहीं  
 निकलना अपना विनम्रता को गवा देने का आगवा से व्याकुल नहा है

निराने के लिए उनसे निवेदन करने जाना ही मैं था। मित्र जी मेरे पिताजी के मित्र थे उनके अनुरोध पर उन्होंने निम्नता स्वीकार किया। यहाँ बात बिन्दुन भिन्न है। इन जगें पानी ब्रह्म रामदेवों प्राक्कथन-लेख के रूप में मन्त्र पुनन के लिए उत्तरदायी हैं—भन ही मित्र करने प्रति उत्तरदायी हों—यंगे ही उनका अनुरोध मानने का दायित्व मुझ पर है। मैं यह बतार छुनी नहीं या मरुता कि मेरे मित्र का अनुरोध का टाल बगे मरुता था? यह ता एक एगे व्यक्ति का अनुरोध था त्रिग मैन देगा तब नहीं था त्रिगम मरा परिचय नेवन पत्रों मगों और कविताओं तक हा मामिन था। यही नहीं प्राक्कथन निम्नता स्वीकारत ममय मैं था भी नहीं कह सकता था कि मैंने उनका निगी इतनी कविताए पढ़नी है कि विवासापूर्वक उनके मन्त्रध म बाध कह सकता हूँ। इतना भी नहीं था। तब तब तो बहुत याग-नी रचनाए ही देगी था विवासापूर्वक कुत्र भी कह सकन की स्थिति म नीं था। फिर भी मैन रामदेव जी का अनुरोध स्वीकार किया तुरत पटना पत्र पात ही आमाना मे स्वीकार कर लिया। क्यों?

यह एक स्वाभाविक हा नीं आवश्यक प्रश्न है क्योंकि प्राक्कथन लेखक प्रथम आलोचक की स्थिति म होता है उसे अपन दायित्व का बोध का प्रमाण देना हा चाहिए। म तीस वय पहन याग-म क्यों के उत्तर म यह कहना ही बाफा होता कि भाई क्या करता? बेचारे न इतना इमरार भरा पत्र लिखा था कि स्वीकार नहीं कर सका मगर आज यह कहना बेमानी होगा। इसलिए मैं खुद अपने म यह मवान पूछना हू कि मैंने इतन स्वल्प परिचय का आधार पर प्राक्कथन लिखना क्यों मजर किया? रामदेव जी की जितनी भी कविताए मैन तबतक दखी थीं उनसे आकर्षित हुआ था या प्राक्कथन या कवन भविष्य की समावनाओं के विषय म आगावान? इस रूप म म प्रश्न का उत्तर देने की प्रक्रिया हा म सप्रह का प्राक्कथन बन जाय यही इत प्रश्न की भी साधकता होगी और इस प्राक्कथन का भी।

रामदेव जी की कविताओं न अपनी धोर मेरा ध्यान लीचा था। ध्य न कवन मीन्य हा अपनी आर लीच सकता हो ऐसी बात

नहीं है। बहुधा हम उसकी ओर भी बरबस आकृष्ट हो जाते हैं जो  
 मवया अमुदर है अप्रीतिकर है। ध्यान प्राकृषित करन वाला गुण  
 या तत्त्व वास्तव में त्रिनगणना या प्रमाधारणता है। इसी कारण  
 हमारी दृष्टि अत्यंत सुंदर की ओर भी जाती है और अत्यंत अमुदर  
 की ओर भी—मन हा हम अत्यंत सुंदर का बार-बार देखन की  
 कोशिश करें और अत्यंत अमुदर की ओर से आगे जबदस्ती हटालें।  
 दोनों की समानता दोनों की प्रमाधारणता में है इसी कारण दोनों  
 आकृषित करत हैं। रामदेव जी की कविता में मुझे आकृषित करने  
 वाला तत्त्व मिला और वचन या गुण उसकी प्रमाधारण माधार  
 णता में भवकता या। आज कविता में ऐसी सहजता साधारणता  
 अकृत्रिमता प्रचलित है। चाहे वचन हमारा अभिजात्य का मोह हो  
 चाहे सहसा प्रत्यागित आधरण में चौंकाकर आकृष्ट करने का  
 मोह हा चाहे जो भी कारण हा हम कृत्रिमता और अनकरण का  
 परंपरागत अवधारणाओं के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊंचा करके  
 अपना अनलकृत ही प्रभावित भाषा और शैली की दुहाई देते हैं पर  
 स्वयं एक नयी कृत्रिमता के जनक और पोषक हो गये हैं। हमारी  
 कविता रीति हूँ राहों का छोटकर नयी-नयी राहें ढूँढने निकालन  
 के प्रयत्न में मरी भुला बगी है कि राह ढूँढने के लिए ही नहीं हाता उस  
 पर चना भा जाता है चनकर आग बना भा जाता है वहीं पहुँचा  
 भी जाता है। भीड़ छोड़कर एकांत की तलाश में अकल्पन का खोज  
 में भागने वाला बनत हो गये और गोंगे में उनहाई तलाशने वालों का  
 हजूम खट्टा हो गया। नतीजा यह हुआ कि जिन्हें अपने अकल्पन  
 का मवमे चाना एहसास है उनका साथ बहुत बड़ा भीड़ है अकल्पन व  
 है जो न अकल्पन के नामी है न मद्भाग्य अकल्पन का जो या ना  
 एहसास ही नहीं करन या यह मानत है कि इस क्षण के अंत ही  
 प्रवेश हो सकिन यत् स्थिति अकल्प है व भीड़ के हैं भीड़ के हा  
 रहेंगे आज नहीं तो कल कल नहीं तो परमों भीड़ उठें और व  
 भीड़ को फिर पा जायेंगे। यी उनकी नियति है यही अस्तित्व की  
 मापकता है।

रामदेव आचार्य इन्हीं लोगों में हैं। उन्हें भीड़ से दूर नहीं  
 गता प्रवृत्ति विगिणता को गया दन की आगवा से ध्याकून नहीं है



भीड़ में गो जाने के भय से राग भर तागा गयी रहते । विभिन्नता का भाव और झूठेपन के तोम में धरापन का धरण करने की स्याद्विभ आधुनिक प्रकृति दासी रत्ताओं में परिवर्तित गयी होती । इसी कारण नारी रचना साधारणता का धरण करती है अथवा धराधारण से होती है । इनका विवेक साधारण का विवेक है धराधारण के आकार के विवेक । दासी कविता परिवेग में स्थान अविभक्तता की पुत्र के विवेक से ही हीन व्यक्ति की मात्र प्रतिनिधता है । दासी विवेक निरक्षय, निरक्षय विवेक गयी है कारण है अतः साधारण है साधारण है धन सदा है। इस धराधारणता की अर्थों सोचा है किता का धन अविभक्त गयी कर पाता । रामदेव आचार्य का अर्थों सोचा है । भाषा या दो कृती की रचना में इस धराधारणता का शक्ति है या व्यक्तता का धरा इसकी भाषा है । श्रुतिमता का अभाव यदि गुण है तो दूसरी जाति विवेक है। साधारण धराधारणता की भाषा है । रामदेव आचार्य का कविता में उनका धर्म में और उनका धरा में नितात रचय गुरु साधारणता अथवा समस्त गुणों के साथ परिवर्तित होती है । यदि एक और 'यय' पर रत्ता कविता है जिमकी भाषा धनभूति की जात्यतिरक्ता से धराधारणता धनक हो उगी है कथ्य और धरा एक दूसरे के धराय और पूरक हो गये है व्यक्तिक और शानिक सावजनिक और सावकालिक हो गया है तो दूसरी ओर वे रचनाएँ हैं जो कवन कथ्य कती भर हैं अथवा नहीं करताती । कवित्व से अधिन ऐसी कविताएँ वक्तव्य का उल्लंघन प्रस्तुत करती हैं । मधुम में एसी एक सा धरिध रचनाएँ हैं पर उनका नामों की गूणों न दूगा । हय की बात यह है कि इन रचनाओं में भी जिनमें कवित्व धन वक्तव्य धरिध मिश्रता है कविता का धरा धराधमन असादिध रहता है । भाषा के प्रति सतर्कता कवि के दावित्व बोध का प्रमाण है । रामदेव आचार्य इस कसौटी पर खरे उतरते हैं । वे की भी न धोता सात नजर धाते हैं न धोया देने का कोणित करते । जिन रचनाओं में कवित्व का जाह वक्तव्य का सत्या मिश्रता है उनमें भी कभी यो नहीं सगता कि कवि ने वेधा प्रभावित अथवा अभिभूत कर के धरा शरीर प्रयोग किया है । इस सधम के पीछे भाषा और भावक के प्रति जो धरार परिवर्तित

होता है वह कवि की निर्भात दृष्टि का प्रमाण और परिणाम ही है। उनकी दृष्टि किसी प्रकार के हमानी मायाजानम फसती भटकती नहीं अपने स्व' को अपने परिवेग को, यथाय को पहचानती है और जसा पाती है वसा ही स्वीकारती है। न यथाय की कमिया और बुराईयो पर पर्दा टालने की कोशिश करती है न काल्पनिक सौन्दर्य सृष्टि को आत्म का मानचित्र समझने की भूल करती है। वह अनादिन है और स्वस्थ सस्पष्ट है, क्योंकि उसने निस्कोच अपनी सहजता साधारणता का वरण किया है। वह स्वयं की यह सीख मानो रामदेव आचार्य ने आत्म वाच्य के रूप में ग्रहण कर ली है

इफ दाउ इहोड डिराइव दाइ नाइट फ्रॉम हेवन  
 देन टू द मजर आफ दट हेवनवान नाइट,  
 गाइन पोएट इन दाइ प्लेस— एंड बी वटेंट।

अपने कवि-कर्म से कवि के रूप में अपनी स्थिति और नियति से रामदेव आचार्य कटेंट हैं भले ही परिवेग में व्याप्त अशिवता के विरुद्ध उनका भावुक मन विद्रोही हो गया हो।

रामदेव आचार्य का स्वर एक आस्थावान धादंगारी का है जो दुनिया को रहने योग्य और जिंदगी को जीने योग्य मानता है। वतमान को अतीत से बड़ा मानता है क्योंकि उसका विश्वास है कि भविष्य वतमानसे बड़ा होगा होना चाहिए। यदि हम आगे बढ़ रहे हैं तो निश्चय है आज जहाँ हैं वल वहाँ से बहुत पीछे थे और कब बहुत आगे होंगे। इस आस्था के साथ आज की चारों ओर मुन पडा वान निरागा सप्राप्त और पराजय के हाहाकार की संगति नहा गयी। कवि को यह पता है पर वह दबेबापन महसूस नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि जतन हानानार करने वाला निराशासदी भी उसके साथ ही होगा क्योंकि वह भी मनुष्य है साधारण मनुष्य है और मनुष्य की साधारणता ही उनकी अजेय आभावात्मिका है। कवि की दृष्टि परिवेग की ऊपरी सतहों तक ही जाती है वह केवल दुःख और नय ही देख पाता है पर वह जो बुद्धि मना है वह गहराई से मगता है। गहराई से देवों के लिए पत्तों उतारना

जल्द ही नहीं है। गहराई की धारा देगने की प्रक्रिया में नहीं देगने  
 यानी दृष्टि से होती है।

कवि की ध्येयवार्ता कविताओं में मझे गाय नहीं हुआ  
 है की लगी। कहा कही कि है का स्वर भी इतना था हुआ गया  
 कि कविता विनाह की गहराई का विरोध की लगी। काय का  
 गटके जस ईमानदार और ईमान्तर। सामान्य जो ईमान्तर  
 है उस इतना एकाग्र है क्या कि यह ईमान्तरगी में बाध कर रहा  
 है? बात कह रहा है इतना ही काफी है ईमान्तरगी में ता होती  
 ही। एक गटकन याता का और उतनाय है विनूपा।  
 (भना इतना क्या अथ दृष्टा?)

पर जो नया कवि हन नय थप पर यह सध्या  
 समय की गतिशीलता एक ईमान्तर प्रणय गीत और या ना  
 रात में गाव जगी उत्कृष्ट कविताएँ मजा है उगकी विनूपाएँ  
 (इतना अथ जो भी हो) ध्यान आकृष्ट नहीं कर सकना। त्रिग  
 वनम से य पत्तिया निवनी

पत्तो से टकराकर लडगडानी  
 धारावी हवा  
 ध्यापक क्षेत्र में  
 समाधि लगाय विचार-मग्न प्रकृति  
 यश-वदा दृष्टता तारा  
 और वातावरण का गुमसुम चुप्पी,  
 और मेरे मन पर  
 बनते बिगडन  
 अनेक तल चित्र !

उससे हिंदी को बहुत-बुद्ध आगा मपे ता करने का अधिकार है।

अमरावती  
 १५ टगोरनगर  
 इसाहाबाद  
 २७ ७ १९६८

बालकृष्ण

## अनुक्रम

### उजागर क्षणों की कविताएँ

अगरों का विद्रोह	१
दो प्रतिक्रियाएँ	२
प्रजातन्त्र का गीत	३
मसीहा	४ ५
आदमी	६
पाठा व्यक्तित्व	७
एक ईमानदार कविता	८
एक ईमानदार प्रणय-गीत	९
दूटन का गीत	१०
यदि कविता पास नहीं हाती	११
विद्रूपता	१२
प्रोफ़ेसर	१३ १४
दो सपाट कविताएँ	१५
चाण्डी रान में गाव	१६
ममय दो अनुभूतियाँ	१७ १८
तीन समानताएँ	१९
गोलीकाट नाठी चाज	२०
गौ भक्त क भ्रामरण अनगन पर	२१
घाओ मेरे साथ आओ	२२
मैं हूँ भीड़ का एक स्वर	२३
मैं घोर मेरी पीढा	२४
उत्रप्यूह	२५

श्रीपत्रिका श्री	२६
जीने का अर्थ	२७
एक तुला	२८
सम	२९
नमः वपः पर	३०
कागज के जहाज	३१
कोई गात नहा जामा	३२
गीत	३३
संज्ञित प्राणी का गीत	३४ ३६
अपने मित्रों के लिए	३७
मेरी परछाया	३८
जिन्दा मुर्ते	३९
दो नधु कविताएँ	४०
तुम्हारे द्वारा बुना हुआ स्पटर	४१
सिगरेट बोनती है	४२ ४३
रेखा चित्र	४४ ४५
कोए और जादमी	४६
तुमने देखा है ताजमहल	४७
मरनी की रात का गीत	४८

### लम्बी कविताएँ

स्थिति बोध	५१ ५४
विनूयता का अभिप्राय	५५ ५७
ये सूरतें ये शबलें ये तगरीर	५८ ६३
कुछ मग्य कविताएँ	६४ ६६
परम्परा और हम	६७ ७
तुम्हारी याद में	७१ ७४
गोह भग	७५ ७७
पनभंडो का भृंगार	७८ ८३
पराजितो का वक्तव्य	८४ ८७
प्रात्म इत्या पर्याय गारी	८८ ९
श्री मेरे उलझते विश्वास	९१ ९५

उजागर क्षणों की कविताएँ



## अक्षरो का विद्रोह



अक्षरो न मुझमे कहा—  
हम गलत माचा म फिट मत करा ।

गदा न मुझम कहा—  
हम उघार त्रिए फ्रेमा म मत जडा ।

ध्वनिया ने मुझमे कहा—  
हमारा सगीत मत छीनो ।

अर्थो न मुझम कहा—  
हम नगा मत करो ।

गीतो न मुझम कहा—  
हमारी राग मत लूटा ।

लय ने मुझम कहा—  
मरी गति मत तोडा ।

कप्रिता न मुझम कहा—  
मेरा दद मत छीना ।

मवेदना न मुझम कहा—  
मेरा अत्र्य - वित्रय मत करा ।

अत म उन मवन मिलकर  
एक विचार गाष्ठी की  
और एक स्वर म  
मरी—

कवि की—  
सत्ता के विरुद्ध  
विद्रोह कर दिया ।





## दो प्रतिक्रियाएँ



सडर व विनार गर  
मूखी देहवाले  
उम भित्तारी बानर न  
मिमियाते हुए  
पस माँगन व त्रिण  
मर सामन जर हाय फनाया  
ता मुय पर एन साथ  
दो प्रतिक्रियाएँ टू—

एक

मिमियाता हुआ वह भित्तारी बालक  
मुझे अपना बच्चा लगा ।  
मेरा बच्चा भित्तारा हा गया है ।

दो

मूखी देहवाला वह भित्तारी बालक  
मुझे सिमटा हुआ  
एक प्रश्न चिह्न लगा  
और मेरी इच्छा हुई  
कि बिठा दू इस प्रश्न चिह्न को  
याजनाआ व आकडो पर  
समृद्धि व नवगो पर  
नताआ व ओजस्वी भाषणा पर  
तथा  
ससद और विधान सभाआ पर ।



## प्रजातन्त्र का गीत



एक स्वस्थ व मुन्दर घोट पर  
आमन जमाय  
जत्र एक कुम्प गधे न  
घाड पर चावुक चनायी  
ता घाटा तिनमिना उठा ।

वाला—

आ र मनाहारी गणभराज ।  
क्या गूब तुम्हार भाग्य  
कि हम पर तुम असवार ।

घाड की गरदन पर  
पान की पीक थूकत टूए  
गधे न जवाव दिया—

आ रे भाटू जीव ।  
यह नही भाग्य का दान  
यह है प्रजातन्त्र का गान—  
कि घाडे टाय प्राच  
औ गधे चवायें पान ।



# मसीहा

मसीहा हात हैं व  
जा घुट का मसाहा कहत नहीं  
ममयत है ।

उह मसाहा कतन न त्रिण  
उनर साथ एव जया चनता है  
जत्ये व मभी लाग

स्वार्थी  
कमाने  
या मूख हात हैं ।

मसीहा दत है उपदग  
ता लाग उघत है  
पर जत्येवाल कटत हैं  
वि लाग भूमत है ।

न कुछ विषय पर  
मसीहा घटा बोलते है  
भारी भारी परिभाषाया व  
खात सोलत है ।

नहीं समझ पाते साधारण लाग  
जत्येवाल समझात है  
(कपपूज्ड) मसीहाआ का समझ पाना  
टडा खीर बतते है ।

मसीहा व विचारा को  
नयी नयी न लयो म डालन है  
जा स्वय मसीहा नहीं समझा पाय  
एम एस गूट अर्थों पर  
जत्येवाले प्रकाश डालन है ।

मुना है आदि-काल में  
सभी ममीहा जत्थे पालत हैं,  
जत्थेवानो व पट म अनाज  
और लोगो की आखो म  
धूल डालत हैं ।



## आदमी



म कोई चाहता तो नया हूँ  
कि जब चाहता तो गरागा तू ना  
म कोई चादर तो उठा हूँ  
कि जब चाहता तो मिथ्या ना  
जब चाहता तो आत्मा ला  
म कोई कपड़ों का धारा तो नया हूँ  
कि मर्जी आय जिम मान्ज म रागार  
वीन या लम्ब मूर्खों के लिए  
मरा काट बना दा

मैं कुछ और हूँ  
मैं आदमी हूँ !



## पीडा वैयक्तिक



तुम्ह में बीमार लगता हूँ  
तो ठीक ही तो है  
पर तुम क्यों जानना चाहते हो  
मेरे सदर्भों का इतिहास ?

मेरी वेदना कोई पेम्फलेट तो नहीं है  
कि बाट दूँ  
हर सड़क पर चीराहे पर ।  
मेरा दद कोई पोस्टर तो नहीं है  
कि चिपका दूँ  
हर मोड़ पर दीवार पर ।

जब तुम अपने स्वास्थ्य को जियो,  
और मुझे मेरी बीमारी का जीन दो ।



## एक ईमानदार कविता



मर लिए तारा गीता नहा  
मुझे नहीं लना उगती अग्नि-गराभा ।  
मेर लिए नारी द्रौपदी नहा  
मुझे नहीं करना उम भरी मन्फिन म नगा ।  
म नहीं बहता उम दबी या पनिप्रता  
मुझे नहीं बनाना उम मार मार कर मना ।  
यह सब तो  
मैं धम ग्रथा व लिए छोडता हू ।  
मर लिए नारी बबल प्रेमिका है  
जिसका सारा जिस्म  
मेर सारे जिस्म म उतर आता हू ।



## एक ईमानदार प्रणय-गीत



यहा आओ  
और रख दो मेरे हीठो पर  
अपन दहकते गुलाब  
भर दो मेरी बाहो मे  
अपनी दह के अगर  
धधका दा मेरी घमनियो मे  
ज्वालामुखी लपट,  
मेरी नम-नस म डाल दो तेजाब,  
अपनी जुल्फो मे कहां—  
मुझे डम ल सौ वार  
आज की रात ता  
हो जान दो मेरी मौत  
वनने दो चाद का  
बम हसीन मौत का गवाह  
मेर खून को खून की प्यास है  
मेरी दह को दह की भूख है !





## एक ईमानदार कविता



मरे लिए नारी मीठा नहा  
मुझे नहीं लना उगकी अग्नि-गराभा !  
मरे लिए नारी द्रौपदी नहा  
मुझे नहीं करता उम भरी मन्किन म नगा !  
मैं नहीं कहता उम देवी या पतिव्रता  
मुझे नहीं बनाना उस मार मार कर मनी !  
यह सब तो  
मैं धम गया व लिए छाड़ता हूँ ।  
मेरे लिए नारा कवल प्रेमिका है  
जिसका सारा जिस्म  
मरे सारे जिस्म म उतर आता है ।



## एक ईमानदार प्रणय-गीत



यहा आओ  
और रख दो मेरे होठो पर  
अपने दहकते गुलाब,  
भर दो मेरी बाहो मे  
अपनी देह के अगारे,  
घघका दो मेरी घमनियो म  
ज्वालामुखी लपटें,  
मेरी नम-नस मे डाल दा तेजाब,  
अपनी जुत्फा मे कहो—  
मुझे डम ल सौ वार,  
आज की गत ता  
हो जाने दा मेरी मौत,  
वनने दो चाद का  
इस हसीन मौत का गवाह  
मेरे खून को खून की प्याम है  
मेरी देह को देह की भूख है ।



## टूटन का गीत



सूनी वादी म गूज रही  
घण्डित आदनों की घनिया  
रगिस्ताना की परता म  
दय गया कल्पना की परिया  
वन गयी रास का एक ढर  
अभिलाषा की पुनवडिया  
एकाता का ह भुगत रही  
रगीन जित्या की घटिया  
जिनका ममज्ञा मुक्तामणिया  
व निकली आसू की लडिया  
जुडना था जिनको सूत्र उद्ध  
व कटी साधना की कडिया  
चेतन पथ पर है भटक रही  
सब प्रश्ना की अस्वीृतिया  
सपनों की नगरी म उभरी  
है सण्डहरा की आवृतिया ।



## यदि कविता पास नहीं होती



यदि कविता पास नहीं होती  
तो जम अ धू रा रह जाता ।

पीडा अनगायी रह जाती  
टूटन अनव्याही रह जाती,  
चित्रा मे रग नहीं भरता,  
मपना का सत्य नहीं मिलता ।

अनगढ रह जाती अभिलाषा,  
अनपढ रहता मन का चिन्तन,  
हर विरह अजाला मर जाता,  
लय-हीन पडी रहती घडवना

बिन पाये अथ अश्रु दृग का  
माटी म ढल कर वह जाता ।

तन का मन का यह बाभिल श्रम  
बोविल का बाभिन रह जाता  
यह घुटा घुटा अस्तित्व नहीं  
अपना सबदन कह पाता ।

हर मिलन मूक ही मर जाता  
हर प्रणय अगाया रह जाता  
माध्यम त्रिन मजिल रह जाना  
हर गीत अजाया रह जाता ।

जीवित रहन की मजबूरी  
कमे यह जीवन सह पाता ?



## विद्रूपता



सभी राक्षस  
राम भक्त हो गय है  
सभी निवम्मे  
यस्त हा गय है  
सभी भूय  
कुसिया स चिपन गय है  
सभी विभीषण  
नता बन गय है  
सभी ताते और मना  
राम राम रट कर  
शिक्षक हो गय हैं  
सभी काल चेहरो पर  
पाउडर पुत गया है  
सभी गधो का  
तानसन मान लिया गया है  
आओ  
दफना द बच्चे-बुच्चे यथार्यों का  
सच्चाई को दे द दश निवाला ।





दूमरो क दिमागो में  
ढले हुए हमारे दिमाग  
ढालत रहत हैं दूमरे दिमागो को  
अपने साचा म ।

दिमाग ढालन की हम मंगीने ।

हमारे रग त्रिरग उपदेश  
वन जाते चद मिक्के  
लद जात हमारी बौद्धिक दह ( 1 ) पर  
सूट और बूट,  
हमारी योग्यता के  
बाहरी प्रतीक,  
हाथी के दात ।

एक-दूमर से  
बडा कहलाने की हाड म  
सगात हैं हम दाव पच  
उछालते हैं कीचड  
दिखाते हैं कलावाजिया  
मदारी के रोछ सी ।

बौद्धिकता क हम मातण्ड ( 1 )  
बद रहते  
अथहीन ईप्याशा की  
अथ गुफाओ मे ।  
हमार द्वारा ढाले गय दिमागो से  
बतराता हमारा ईमान

अपमानित हान गति प्रथिमा  
आत्माण वा जाती तायर गमनीन  
श्रीर हम हम वर  
बत्तीमा दिसात रहत  
हमार विदूषक व्यक्ति ।

●

## १ दृष्टि-भेद



बहुत अधिक  
गोलनवालो की सभा में  
एक व्यक्ति  
बिलकुल मौन बैठ था ।  
सभा समाप्त होने पर  
सभ्यमें अधिक बालनेवाले व्यक्ति ने  
मौन व्यक्ति से पूछा—  
'तुम बिलकुल नहीं बोलते  
क्या तुम गूंगे हो ?

मौन व्यक्ति ने  
पहली बार जुवान खोरी—  
सभी भूच  
मुझे गूंगा समझते हैं ।'



## २ विवशता



सोचा था यह  
कि साथी हैं वे  
सो हम निभा ही लेंगे  
पर हुआ यह  
कि साथी थे वे  
इमनिष्ठ हम ही उनका निभाना पडा ।





## चाँदनी रात में गाँव



मिट्टी व घरा नी चाहो म  
करवट बदलता गाँव  
स्नही आवाग पिता व  
सीन म चिपटा  
नह गिगु गा चाँ

मिट्टी व घरा की छना म  
पडा की शाखा तव  
भूलती भूमती  
छनाग लगाती  
लुनती छिपता चाँदनी ।

यह रात  
कि जस किसा कुगन चित्रार न  
पोत दी है मटमले रगो म  
एन गौरवण गहिणी की आठनि  
अधुल वस्त्रा म ।

पत्तो स टकराकर लडखडाती  
गराबी हवा  
व्यापक क्षय म  
समाधि लगाये विचार मग्न प्रवृति  
यदा कदा दूटता तारा  
और वातावरण की गुमसुम चुप्पी  
और मेरे मन पर  
बनते विगडते  
अनेक तल चित्र ।



# समय दो अनुभूतिया



## १ समय की स्तब्धता

मोयी हुई जवान औरत की तरह  
माया हुआ यह समय ।  
एक मील लम्बी  
नाम' हुई गुट्टम टोन की तरह  
जाम हुआ यह समय ।  
काग में इसे समेट सकू ।  
में इसे घरेल मक् ।

हिमानय पर जमी प्रफ सा  
जमा हुआ यह समय ।  
आकाश की तरह  
स्थिर और अनंत यह समय ।  
काग, में इसे पिघला मक् ।  
में इसे हिला सकू ।



## २ समय की गतिशीलता

किमी अंतरिक्ष यान की तरह  
भागना हुआ यह समय ।  
किमी सुपरसोनिक जेट की तरह  
धुं के की नकीरे छोड़ता हुआ यह समय ।  
नाग, में इमक पन्ध पकड पाता ।  
में इमक मणीनी गिजो को जकड पाता ।

अतृप्त प्रनिव्वनिया पुकारती हैं

कामना की नावें मूनी पत्नी है  
काग में समय का रात पाता ।  
म क्षणों का बाँध पाता ।

●

## तीन समानताएँ



जैम काई तज म्पीड से भागती टूई माटर  
जमे ऐमी मोटर के पहियो म  
फमकर कुचला गया क्वूतर  
जसे क्वूतर के लोयट प  
अपनी समभदार गरदन उठाये  
बुभुत्त कौए—

वमी ही यह आयुनिरना ।  
वैमा ही यह पग्गिवा ।।  
वैमे ही ये मम्प नाग ।।।



## गोली-काड लाठी-चाज ।



गोलियो की वीछार म  
छतनी हुए वष क लिए  
मेरा वक्ष अकुलाता है

मुक्ति मघप म गिरा  
खन की हर वूद क लिए  
मेरा रून गरमाता है

अश्रु गस स निकाल गय  
हर आसू क लिए  
मेरा दृग पिघल जाना है

लाठी चाज द्वारा  
पीठ पर बन हर निगान क लिए  
मेरा वदन भनभनाता है

भूख क नाम पर  
हथकडी पहननवाले क साथ  
मेरा हाथ वध जाता है

यह कवि का सत्य है  
राजनता का सत्य नहीं ।  
व्यससायी वक्ता का सत्य नहीं ।।



## गा-भक्त के आमरण अनशन पर



गाय के नाम पर  
आत्मावृत्ति दन वाले ओ शहीद ।  
मुझे तुम पर गुस्सा नहीं  
तरम आता है  
यह साचकर कि आज भी आदमी  
आदमी को छोड़कर  
पगु रक्षा व गीत गाता है  
अपनी बलि चटाता है ।

नगी मान स मुझे कोई महानुभूति नहीं  
क्याकि तेरी मौत मेरी मौत नहीं  
मृटि की मौत ह  
प्रतिक्रिया की मौत है  
सम्भार की मौत है ।

तेरी मौत पर फिर भी  
मुझे दया आती है  
मेरी आत्मा तिलमिलाती है  
क्योंकि तुम आदमी हा  
और हर आदमी की मौत  
हर आदमी की मौत  
क समान होती है ।

दद हाता है यह जानकर  
कि आदमी को मरन की छूट है,  
कि आत्म-हत्या करन का छूट है ।

दग में प्रजातंत्र है  
एगणित जीन मरने का व्यक्ति स्वतंत्र है ।



आओ, मेरे साथ आओ ।



आओ मेरे साथ आओ  
कुछ मूर्तियाँ का ताड़ना है  
कुछ प्रतिमाओं को सण्डित करना है  
जिहान हम भीगी मिलियाँ बना लिया है ।

आओ मेरे साथ आओ  
कुछ देवताओं को अस्वीकारना है  
कुछ धर्मों को नकारना है  
जिहान आदमी को जानवर बना लिया है ।

आओ मेरे साथ आओ  
कुछ परकोटों को मिटाना है  
कुछ स्तम्भों को गिराना है  
जिहोन हमारी प्रतिभा को कुण्ठित कर दिया है ।

आओ मेरे साथ आओ  
कुछ खाइयों को पाटना है  
कुछ साकलों को काटना है  
जिन्हान मसूचे राष्ट्र को नपुसक बना लिया है ।

आओ मेरे साथ आओ  
कुछ सस्कारों को जलाना है  
कुछ विश्वासों का हिलाना है  
जिहोने हमारी आत्माओं को नगा कर दिया है ।

आओ मेरे साथ आओ  
कुछ पजों को मोड़ना है  
कुछ जबड़ों को तोड़ना है  
जो हम जिंदा निगलन की साजिश कर रहे हैं ।  
आओ मेरे साथ आओ ।



मैं हू भीड़ का एक स्वर ।



मैं हू भीड़ का एक स्वर  
मैं हू नदी की लघु बूद  
मैं नभ-गगा का एक दीप ।

मुझे समूह से मत छीनो ।  
मुझे प्रवाह से मत काटा ।  
मुझे आकाश से मत समेटो ।

सम्मान दो उह  
जो भीड़ से बड़े है  
जो भीड़ का भेड कहते हैं ।

प्रतिष्ठा दो उह  
जो सिंहासनो से चिपके है,  
जिह सिंहासनो मे बहद इश्क है ।

प्रास्तिया उनका करा अपित  
जिन पर विशिष्ट होन का वाभ है  
जा छाती तानकर वोभ डोत है ।

मेरी लघु इकाई को  
हथकड़ियो से मुक्त रहन दो ।  
मुभम मेरा छोटापन मत छीनो ।  
मुझे बम बही रहन दो  
जहा मैं हूँ—

मैं हू भीड़ का एक स्वर,  
मैं हूँ नदी की लघु बूद  
मैं नभ गगा का एक दीप ।





# मैं और मेरी पीडा

७

मुझमें ऐसा क्या है  
कि मैं द्रुटता नहीं हूँ  
मैं विखरता नहीं हूँ ।

चोट सहता हूँ अनेक  
हर चाट साकर तिलमिलाना हूँ  
घायल हा जाता हूँ  
पर मेरी पीडा  
कभी भी आत्म हत्या की  
प्रेरणा नहीं बनती  
मृत्यु का आद नहीं बनती ।

मैं घावा को सहला लेता हूँ  
भरहम पट्टी कर लेता हूँ  
फिर स्वस्थ होकर  
नये सिर से  
जीवन को पकडने के लिए  
चल पड़ता हूँ ।

फिर जब अपने चारों ओर देखता हूँ  
ता पाता हूँ  
कि मुझ पर पड़ी प्रत्येक चाट  
स्वयं दट गयी है  
विखर गयी है ।

●

## चक्रव्यूह



मेरे देगवामियो न  
कवल यथार्यो का  
जीना सीखा है ।  
सम्भावनाग्रो को जीना  
वे नही जानत ।  
सम्भावनाग  
यथार्यो मे वडी होती ह ।  
जिम दिन मर देगवामी  
सम्भावनाग्रा का जीना नीख तग-  
उम दिन  
जीना सीख तग ।



## श्रीपचारिक हसी



आज मैं एक खोखली हसी हूँ,  
एक श्रीपचारिक हूँ हूँ  
एक शिष्ट हूँ हूँ ।

किसी परिचित ने कुछ कहा  
जिसके उत्तर में हसना था  
सब हस थे  
मुझे भी शिष्टाचार बना हसना था  
तब मैं खोखली हसी हूँ,  
श्रीपचारिक हूँ हूँ  
मम्य हूँ हूँ  
सुसंस्कृत हूँ हूँ ।

मरी इस हसी ने  
वहारे नहीं बुलायी  
ओस के मोती नहीं लुटाय,  
गुलाब की महक नहीं बिखेरी  
विजली की कौंध नहीं फेंकी  
इंद्रधनुषी रंग नहीं ढलवाये ।

इस हसी ने  
मेरे अनेक रोमा में स  
एक रोम का भी स्पर्श नहीं किया  
इसने मेरे दिल की  
अनेक धडकनों में स  
एक भी धडकन को नहीं सुना ।



## जीने का अंदाज ।



मुझे व सब वेईमान पसंद हैं  
जा खुले दिल स वेईमान हैं  
जिनकी उईमानी सीना तानकर चलती है ।

मुझे उन वईमाना म घणा है  
जिनकी वईमानी

एक खूनसूरत नक्राव म सजा फरव है ।

मुझे वे ईमानदार मूल लगते ह  
जिनकी ईमानदारी एक लाउट-स्पीकर है ।

व ईमानदार कायर हैं भूठे ह  
जा ईमानदारी की सजा भुगतकर  
राने हैं पछनाते हैं ।

व लाग वहल्ला क वगज है  
जो न वईमान हैं  
न ईमानदार

य मध्यम-मार्गी लाग स्वार्थी हैं कमीन हैं ।

जिन्गी दा ही तरीका स जी जा सकती है—

खुली वईमानी म  
या गभीर ईमानदारी म—  
दानो का जीने का  
एक निराला अंदाज होना है ।



## एक तुकतक



[सदभ जनेय जी का अघ्यता म नव गान नयी वत्रिना गोष्ठी १६ २ तथा २१ फरवरी १९६६ का बीकानर म आयाजित हुँ थी । उसम पड़े गये कुछ विगना के निवघो म तना उतभाय तथा भटकाव था कि जोताभा का अनेक बार गाना हा जोयना पडा । जनेय जी को छाडकर गप सभा वन्ता जन्ति थ । अक्षय चद्र गर्मा ने परम्परा और कवि पर एक सफ्त भवण दिया था । अम मुरय वताओ में मा विद्यानिवाम मित्र श्री सर्वेश्वरदयान सभना तथा श्री रघुवार म्हाय थ ।]

यह तो समझ म आ गया क्या क्या हमार ध्यय थ  
कुछ थपठ पुरपा क वचन हर आर स दुर्भेद्य थ  
अक्षय समझ म आ गय  
फिर मात हम तो सा गय  
अनय जी ता नय थ बाकी सभा अज्ञय थ ।

खेमे

•

तुम मुझे जीनियस कहा  
और मैं तुम्हें ममीहा  
तुम नरा मरा अभिनन्दन  
और मैं वर तुम्हाग अभिषेक ।  
गिन निभा रहा है अयाग्यताण  
वमा म उट रहे हैं खावल लाग ।

•

## नये वर्ष पर



लो चला गया  
एक और वर्ष !  
रह गया मैं  
वही का वही  
कुछ परिचयों का जोड़ना  
कुछ यादों को ताड़ना !

पड़ाव की खोज में  
यात्राएँ शिथिल हैं  
शब्द-हीन अनुभूतियाँ  
पीछे छूटती हैं  
मेरी एक और प्रतिमा  
हर वर्ष टूटती है !



## कागज के जहाज



सपनों के सागर पर  
तर थे मन्सूबों के जहाज ।  
आदर्शों की भूमि पर  
उभरे थे कल्पनाओं के राजमहल ।

क्या पता था कि मेरी दुबलताएँ  
मेरी विवशताएँ होंगी  
सागर पर तरते जहाज  
कागजी होंगे  
तथा राजमहलों की नीवों में  
रेत भरी हागी ।

जा शेष बचा है,  
वह है एक विराट् गूँथ,  
जिसके नंगे यथाथ का  
जन्मा है मेरी दीनताओं ने  
मेरी हीनताओं ने ।





कोई गीत नहीं जनमा ।



जब तक साथ रही तुम मेरे गाने नहीं बनना  
जब तक पास रही तुम मेरे कोई गाने नहीं जनमा ।

गीत जनमता है पीडा का  
भट्टी में गलकर तपकर  
छंद उमड़ते हैं नयनाएँ  
मधो में घुन कर ढल कर ।

विरहा की विजली में दमका  
करती है मन की कविता  
सूनपन की मुक्त पहाड़ी  
से बहती लय की सरिता ।

जब तक साथ रही तुम मेरे कोई दर्द नहीं रहना  
कितनी ऋतुएँ आयी लौटी कोई फूल नहीं महना ।

यह एकाकीपन कितना अंध  
उबर बनकर लहराता  
हर बसंत पल रगता है  
पावस कविता कह जाता ।

शिगिर सिखाता नये नये स्वर,  
ग्रीष्म सौपता है छविआ,  
पतझड़ नये अर्थ देता है  
मुस्तार स्वयं होती ध्वनिया

जब तक पास रही तुम मेरे कोई भाव नहीं बहका,  
कितने गाने मुने या बोले कोई मौन नहीं चहका ।





मत वहन दो वजरायी पलको से य पीटाए जद  
मुझे ताडन का काफी है, मेरे आसू, मर दद ।

मुझे उम्र दो, एक हमी ही मेरी चोली म डालो,  
मुझे प्रभा दा, मरे मुख की स्याही जरा पाठ टालो  
यदि आसू ढाय ता कल का सपना भी लुट जायगा  
तुमने मुम्हाना छाना ता फिर भविष्य घुट जायेगा ।

पामागी की दवेन पपडिया मत जमन दो मुख पर मद  
मुझे ताडन का काफी है मरे आसू, मर दद ।

भुकी पराजय के समीर को मत सासो म वहन दो  
सूख व्यथा का इन आम्वा म आत्म-कथा मत वहन दो  
बाजा ता आजा नयना मे इतना छल करना होगा  
वर्ना जीवन का मतवव ही जीते जी मरना हागा ।

सूनपन म धिरी आस्था की क्षडता जाती है गद  
मुझे ताडन का काफी हैं मेरे आसू, मेर दद ।



## खण्डित आदर्शों का गीत



[बध्य की दूटन छ द की दूटन में अभिव्यक्त  
एक दाल्पिक प्रयोग]

झिदगी कवल अपाहिज है  
कि जिमकी

करबट सब मर गयी मर लिए  
सड गय सारे गुलाब मर लिए !  
दूटन सभी मर लिए !  
विघटन सभा मरे लिए !

मै कौन हू क्या हू-  
सभी य प्रश्न है भङ्ग  
अस्तित्व क सब रग  
अव ता हा गय बदरग  
हा गय चजर यहा  
सब खेत सपना क  
हा गय वीरान सारे  
दृष्टियो के बाग  
हौसला को खा गयी  
सम्भावनाए

हो गयी भातम सभी  
शहनाइया मेरे लिए  
रित्तनाग्रा म वच्चा  
सगीत है मर लिए !  
दूटन सभी मरे लिए  
विघटन सभी मरे लिए ।

मर चरणा का खाज  
नन्ही है रित्तजा की  
सागी खुनिया बन गया  
अगरों का विगेह / ३४

अपरिचित महिलाएँ  
 जीवन की पमरी राहों पर  
 बम एक पड भी नहीं मिला  
 मिल गयी  
 औपचारिकता जुडी मित्रता से  
 मुझको घेरा  
 मेरी खामोश इकाई न  
 अपने भीतर  
 सुनता हूँ टूटी आवाजें

दद अब  
 केवन मधुरतम गीत है मर लिए ।  
 हर तरफ करती प्रती न  
 उदामिया मेरे लिए ।  
 टूटन मभी मेरे लिए ।  
 विघटन सभी मेरे लिए ।

भुन रहे बोन के  
 पवत हूँ मेर मन पर  
 हर चौगहे पर मिली मुझे  
 असफलताएँ,  
 मेर गीतो का रोद लिया  
 मेरे अपन परिवेगो न  
 हर तरफ खोजती फिरती  
 मुझको ऊब, घुटन  
 जीवन की गीनक  
 चरगी रही ब्यवम्याएँ  
 मामूम भिनी आखें मुझका,  
 जिनमे काजल की नहीं रख  
 नन्दे अकुर ऐमे दये  
 जिनसे सूरज न बिया बर

त्रिच्छ रहे हर लिंगा म  
अब घुमाव हैं मरे लिए ।  
हो गये अंधे सभी  
दिन रात हैं मेरे लिए ।  
टूटन सभी मरे लिए ।  
विघटन सभी मरे लिए ।  
जिदगी केवल अपाहिज है  
कि जिसकी  
करवट सब मर गयी मर लिए ।

●

## अपने मित्रों के लिए



कितने बड़े बड़े  
कालजयी योद्धा  
अमोघ अस्त्र-शस्त्र लिए  
मेरे चट्टानी सीने का  
तोड़ने आये  
पर मेरे सीने से टकराकर  
उनके अमोघ अस्त्र-शस्त्र  
चकनाचूर हो गए  
रह गया मैं अक्षत  
अक्षत, अक्षत !

उस दिन जब प्रेम की भाषा में  
कुछ मित्रों ने  
शब्दों की वीछार की  
तो लगा  
कि स्नेह की भाषा ने  
मुझे उप की चट्टान बना दिया है  
प्यार से शब्द  
सूय की विरणें बन गये हैं  
जिनके मधुर स्पर्श से  
मैं पानी पानी हो गया हूँ  
और मेरा अस्तित्व  
धीरे धीरे मिट रहा है !



## मेरी परछाईया !



घतीत एक् मली चादर है  
मैंन उस उतार फटा ह ।  
मैंन नय परिधान पहन निय ह  
और मैं नयी राहा की तनाग म  
निकल गया हूँ ।

लेकिन यह क्या ?  
मैं स्तब्ध हूँ !  
म रोमांचित हूँ ॥

अभी जब मैंने  
पीछे मुडकर देखा  
ता पाया  
कि मरी हा परछाईया  
मरा पाछा कर रही ह ।



## जिन्दा मुर्दे ।

मेरे दिमाग मे कब्रों हैं,  
जिनमे जिन्दा सपने  
दफना दिये गये हैं ।

हर रात को  
ये जिन्दा मुर्दे  
अपनी कब्रों से बाहर निकलने हैं  
और  
हर दिन की समाधि पर  
चढा देते हैं  
भावना के बुद्द सडे हुए फूल  
जला देते हैं  
डच्छाग्रों के बुद्द तेल-हीन दीपक ।  
फिर ये जिन्दा मुर्दे  
अपनी कब्रों म लौट जाते हैं ।



## दो लघु कविताएँ



### १ उस दिन

उस दिन

उन सामोश पहरों में

सड़क के दाना किनारा पर गढ़

दो जवान पडाँवों

एक दूसरे के गले में बाह बाँध

आलिंगन-बद्ध दस्ता

ताम्र महसूस किया

कि य मैं और तुम थे ।

### २ वह सध्या

उस उन्मास सध्या के समय

पहाड़ा में घिरे हुए

मैंने तुम्हें आवाज़ दी ।

मेरी आवाज़

पत्थरों में सिर फोड़कर लौट आयी ।

मेरी आवाज़ का उत्तर

मेरी ही आवाज़ थी ।



## तुम्हारे द्वारा बना हुआ स्वेटर



आज तुमने स्वेटर बुनकर  
जिम मुस्कान के माथ  
उमे मुझे समर्पित किया  
तुम्हारी कमम ।

मैं अभी भी  
जम मुस्कान की सकरी घाटी म भटक रहा हूँ ।

तुमने यह क्या पूछा—  
कमा बना है स्वेटर ।

क्या मर लिए  
इनना ही काफी नहीं ह  
कि इमे तुमन बना ह  
और इसक माध्यम मे  
तुम्हारी पतली जगनिया  
मेरे तन मन का  
स्पग कर रही हैं ?



# सिगरेट बोलती है !



म एक सिगरेट हू ।  
मुझे पीत हैं लगन कवि या त्रियाणा,  
आत्म विस्मृति के लिए  
तामयता के लिए  
एकाकीपन के लिए ।

मैं एक सिगरेट हू ।  
मुझे पीत हू बाबू लाला या अफसर—  
शौक फरमाने के लिए  
रीब जमान के लिए  
शान दिखाने के लिए ।

लेकिन मुझे किसने पहचाना इनमें ?  
मेरा व्यक्तित्व कितना विशाल है—  
यह किसने जाना ?  
कोन जानता है कि मैं जलती हूँ अपने आप में  
और मेरी आहों का धुआँ  
निकलता है पीने वालों के मुँह से ?

मुझे किसी कवयित्री  
की ये पत्तियाँ निरर्थक लगती हैं—  
तू जल जल जितना हाता क्षय  
वह समीप आता छलनामय ।  
क्योंकि जब मैं जल कर क्षय होती हूँ  
तो कोई छलनामय मेरे समीप नहीं आता  
पीनेवाला फक दता है मुझे सड़क पर  
चौराहे पर

और कुचल देता है मुझे  
खुद ही अपने परों से ।



## रेखा-चित्र



नाइलन की साडी में है गिमटा हुआ गरीर  
एडियो में लचकते हुए बाटा क है मन्त्रि  
जुल्फा में महयता हुआ टाटा का है गम्भू  
हाठा पर उभरती हुए लिपिम्बिटा तो हैं परन  
गाला पर उमडत हुए पाउडर क है बाप्न  
नना स भावती हुई मुरम की है रग्ना  
बडी मामूम है  
बडी कामल है  
बडी नाजुक है हसीना ।

बाय हाथ की कलाई पर है सान की घडा  
हथली में लटवता है माती जडा मनीग्र  
दाहिने हाथ में बजता हुआ ट्राजिस्टर रेडियो है  
उगली में चमकती है तान सिंहा की अगूठी  
नासूनो पर मचलती हुई पालिश की चमक है  
गले के हार में हसता हुआ है श्वेत नगीना,  
बडी मामूम है  
बडी कामल है  
बडी नाजुक है हसीना ।

बडे नाज स अदाज स इसे पाला जाता है  
नाजुक बदन के लिए  
विदेशो में नाजुक अनाज भगाया जाता है,  
चीनी का वही इसस बडे दूर का नाता है  
सजियो स बसका जी घबराता है  
दूध मक्खन स यह डरती है  
चाय-बाफी स इश्क करती है  
बिस्किट स पेट भरती है  
नमकीन प्लेटा पर मरती है

थोड मे परिश्रम मे इसे आता है पसीना,  
बड़ी मामूम है  
बड़ी कोमल है  
बड़ी नाजुक ह हमीना ।

अन्के भीतर यदि भाको तो खोखला टाचा है  
आखा के भीतर गहरे डूबे हुए गटटे हैं,  
जुन्फा क किनारो पर उगते हैं सफेद अकुर  
यो आती है हर वष  
भारत मे दीवाली ।  
यो आती है हर वष  
भारत मे दीवाली ।।

•

## कौए और आदमी



जगल स गुजरत हुए  
दखे मैंन तीन कौए-  
तीनो मुभ पर आक्रमण करन के लिए  
हवा म पतर बल रहे थे ।

आक्रमण का कारण जानना चाहा मैंन ।  
पास था एक पेड़  
पेड़ पर था घामला  
घामले म हाग उनक शिगु-  
मैंने सोचा और आश्वस्त हो गया ।

तीन कौए क्यों ?-मैंने सोचा ।  
एक मादा हागी दा हागे नर ।  
एक मादा !  
दो नर !!  
दानो उन शिगुओ क दावदार ।  
दोना पहरेदार !!

मै परेशान हो गया ।  
मैंने इस स्थिति म  
आदमी को डालकर देखा  
तभी मरे दिमाग म गूज गयी गोलिया  
शरीर म एठ गयी एक हत्या  
हृदय पर चिपक गय खून क कुछ धत्रे ।



## तुमने देखे है ताजमहल ।



तुमने समीपता ही पायी हर मजिल मे  
तुम क्या समझो वाभिल राहा की दूरी को ।  
तुमन दमे है ताजमहल जगमग करते,  
तुम क्या समझो विन माल विन्नी मजदूरी को ।

रगीन गमाओ ने तुमको दुनराया है,  
तुमका बहलाया है फूनी न कलिया ने  
चचन चितवन ने चकित किया चचलता स  
तुमना भरमाया है रुमानी गलिया न ।

तमन केवल आदर्शों के गुन पाठ किये  
तमन यथाथ के कड घूट का पिया नहीं ।  
तुमन सहलाये कुतन शोख कल्पना के  
तुमन दिल के रिमते घावो को मिया नहीं ।

तुमका जीवन से मिने छलकत पमान  
तुम क्या समझो आमू भीगी मजदूरी को ।

हर नय क्षितिज ने तुम्ह दिय उपहार नये  
हर पगडडी को दीपित किया चादनी न  
हर नयी माड पर तुम्ह मिली मनुहार नयी  
हर चौराहे पर स्वागत किया रोगनी न ।

तुमने बेवन बहते झरानो के गीत मुने  
मागर मे उलत गिरत ज्वार नहीं दमे ।  
है तुम्हें रिक्काया घूघट डान घटाओ न  
तुमन विजनी के मर अगार नहीं दम ।

है तुम्ह मुबारक अय हीन हर नयी मुजह  
तुम क्या समझो बदन गध्या मिदूरी का ।





## सरदी की रात का गीत



सरदी की यह सुनसान रात  
है सुन सड़क  
भूया व लटक मुखडो-सी  
कुछ घास फूम की भापडिया  
है आस पाम  
जो एक हवा के थप्पड का सह मन नहीं  
लगती है यो  
परित्यक्त प्रियतमा हा निराग !

मिल के बल-भुजों  
की ध्वनिया है गूज रही,  
बारह बजने की सुस्ती  
दिखती गिरजाघर की आखो म  
चिमनी गाती है गीत मशीनो  
का मोठी झपकी लेकर  
भर रही उडानें ढलती रात  
उदास हवा की पाखो म ।

लडखडा रही है मौन रोशनी  
लम्प पोस्ट की बाहा मे  
बुछ कुत्त रह रह भौंक रहे  
चमगादड पलकें विछा रहे ह  
नयी सुत्रह की राहो मे !



लम्बी कविताए



## स्थिति-बोध

•

खा दिया है यदि हमन मम्बघो का अय  
तो यह मन ममथना ए दोम्न ।  
कि हम बहगी हा गय हैं ।  
हमार निए उन मम्बघों म  
कोई अय ही नही बचा था ।  
यह तो हम  
अनिम्निक प्रजन दो रहे थे  
जानपरा की तरह उम ढाने म तुफ ही क्या थी ?

मनली के जाने-सा  
हा गया है पमे का कुछ ऐसा फँसाव  
कि मार मम्बघ उलभ गय हैं  
महीन तन्नुआ म ।  
उनके नगपन पर  
दुनियादारी का लजादा टाग दिया गया है,  
ताकि खाखनापन ढका रहे  
और दिखावटीपन  
जिन्दगी का नाम धरकर  
एक-भी रफनार स चलता रह ।  
बचा ही क्या है इस बीनी दुनिया म ऐ दोम्न ।  
जिमे प्यार किया जा मने  
मिवाय अपन अस्तित्व के  
जिममे प्यार करना हमारी मजदूरी है ?  
बहन हैं कि जिन्दा हैं हम लोग,  
क्याकि दिन अभी आता है  
और रात अभी टननी ह  
जिनमे हमारे जिन्दा होन का पता चलता है ।

ईर्ष्या है हम उन पूवजा म  
 जो पालत रह सपना के ताजमहल  
 रचते रह आदर्शों के गढ़ ।  
 हमारी पीढी तो  
 स्वप्न भग का उन गलिया स गुजर रहा है,  
 जिघर भावन का माहस  
 कोई मूल्य  
 कोई आदर्श  
 कोई गीत  
 नहीं करता ।

ऐस म माफ करना मुझे ए दास्त ।  
 अगर खो दिया है मैंने  
 पूनम का चाद  
 भरनो का सगीत  
 हवाओ का अहसास  
 और समुद्रो का विस्तार ।  
 हमारी आख और हमारे कान  
 रूप नाद और शब्द  
 की परम्परा खो चुके है  
 और इस कदर परिचित हो गय हैं  
 भीतरी चीखो स  
 कि सब प्रकार क रूप नाद और शब्द  
 हम अनटुम्हा छोड जात है ।  
 कट गयी है हमारी कविता  
 सयोग वियोग स  
 नव शिख सौंदर्य स

अभिमान प्रसंगा से,  
 क्योंकि कविता हमारे लिए  
 अबकाग प्रिताने  
 या मूर्ख रिताने की वस्तु नहीं है।  
 कविता हमारे लिए एक कुली है  
 टानी है वाम  
 तय कर्नी है फामने ।

माफ करना ऐ दोस्त ।  
 कि हमारी कविता पथ अष्ट हो गयी है  
 क्याकि जिम पथ मे उन गुजरना था  
 मका मारी पगडडिया काट दी गयी है  
 मारी लकीरों मिटा दा गयी है ।  
 और हम जानन ह उनको  
 जिन्हान हमारी कविता क रास्तो पर  
 मगीना के दत्त बिठाय है  
 और वाम्दा की स्याहा पाती ह ।

एमे म आदचय ही क्या ए दाम्त ।  
 गर हम हमना भून गय हा  
 हमने का अथ ही क्या है उन मजिला पर  
 तहा मे  
 नग्यडान आमुआ का बारखा गुजर हा हा ।

गायद बच गय हा अब भी कुछ राग  
 जो रम-हीन त्रिदगा म नी  
 रम की धान दूड हा नन हा  
 लेकिन हम तो ऐसे पात्र है म्ज के  
 जिनका भविष्य

विलेन के सजर पर टिवा है  
 और विलेन सजर तेज कर रहा है ।  
 इन सबके बाद भा ए दास्त ।  
 मैं नहीं हूँ गानिका की उम पति म  
 जो टूटन ऊँर घुटन को  
 इतिहास की नियति मान बठ है ।  
 मैं तो वह युयुत्सावानी हूँ  
 जिसे जिदगी के विरुद्ध की जा रहा  
 सारा साजिश का पता है  
 अस्तित्व क खिलाफ  
 बनाय जा रहे मार लाशा गहा की जानकारा ह  
 और जो  
 शहीद सनिका की परम्परा म  
 किया जानवाला पहला हस्ताक्षर है ।  
 यह बात अलग है ऐ दोस्त ।  
 कि खो दिया है मैंने  
 पूनम का चाद,  
 झरनों का संगीत  
 हवाआ का अहसास  
 समुद्रा का विस्तार  
 और कविता का रस ।

●

## विद्रूपता का अभिनय



तुम्हारा होली खेलने का निमंत्रण  
कितना निर्जीव ।  
कितना बेसुरा ॥

इस बदरग अस्तित्व मे  
कहा हूँ इतन रग,  
जितने पिचकारियो मे भर कर  
तुम बहाना चाहते हो ?

बीमार आस्थाओ की  
इम महानगरी मे  
कहा है वह खुशहाल विपुलता  
जिसे मुट्टिया भर भर कर  
गुलाल की आधियो म  
तुम उडाना चाहते हो ?

कौडियो के मोल खरीदे जानेवाले  
इसान के अस्तित्व म  
वहा है वह मगीत  
जिसे वासुगी व मृदग,  
'टफ और ढालव' की ताल पर  
तुम बिखेरना चाहते हो ?

इम पगु परिवेश के मुर्दा चेहरो मे  
वहा है वह उमाद वह रौनक  
जिह तुम फाल्गुन के गीतो म  
गाना चाहते हो ?

रीन जनन वाली इस कुम्प मम्यता म  
वहा है वह शिरवन, वह धडकन,



जिहे तुम नृत्य करते  
पावो क घुघरओ म बाधना चाहत न ।

तुम्हारा हाला मेलन का निमंत्रण  
कितना निर्जीव ।  
कितना बमुरा ॥

चाहत हो तुम  
रिक्तता क मातमी प्रहरो को  
हप और उल्लास से भरना ।  
चाहत हो तुम  
कोसो फल रेगिस्तान म  
अमृत का परना ॥

जिदगी की तस्वीर—  
तुम और मैं ।  
और हमारे य प्रतिरूप ॥  
होली खेलना हमारे लिए  
विद्रूपता का अभिनय होगा  
मेरे साथी ।

हम एअर-कडीशाड कमरा म सजे  
साफा सट गही हैं  
हम सगमरमरा दीवारो पर लटवते  
गाधी और बुद्ध क तल चित्र नही है  
हम मकरी लाइट स प्रकाशित  
गोदरेजी तिजारिया नही हैं  
हम मखमली गद्दो को रौदनेवाले  
दिवा स्वप्न नही है ।

हम ता है-  
 बरक की ज्यया ।  
 टाइपिस्ट की जगनिया का श्रम ।  
 गहिणी की आम्बा का पुत्रा ।  
 बान प्रियवा क आमू ।  
 नेखर की मरीची गयी नरम ।  
 शमित के घर पर नूमती नृम ।  
 कुती क डगमगान कदम ।

टनना उवा गूय  
 और तुम्हारा हाथी मेहनत का निमन्त्रण ।  
 समा दश माती ।  
 प्रिद्रूपता का यह अभिप्राय  
 अन्न मुन्नन्न नहीं हा मरगा ।

ये सूरत,  
ये शाले,  
ये तस्वीरे ।

•

मुझे दा मूर्तों १ घर लिया है ।  
मुझे दा गपना १ दयात लिया है ।  
मुझे दा तम्बारा १ गिरफ्त म ल लिया है ।  
य मूर्तों ।  
य गानों ॥  
य तस्वीरें ॥॥

रागजा पर जब जब रत्नम दौड़ता है  
कल्पना क घाट  
जब जब अपनी तज रफ्तार म  
द्वि-दगी का पाछे छोड दत हैं  
तब तब ये सूरतें जम लती हैं  
ये रक्षाण आकार ग्रहण करती हैं  
ये शकें य सूरतें य तस्वीरें  
छटपटा कर पना पर उतर आती है ।

यह उदास उदास  
यह निराश सूरत किसकी है ?  
यह बोभिल चाल  
ये बिखरे बाल  
ये फटे हाल  
यह मेरा ग्वाला है ।  
महीने भर म दिया गय दूध का  
हिंसाब मागता है ।  
यह अट्टहास अट्टहास

अक्षय का विद्रोह / ६

यह मनहूस गकल किसकी है ?  
 यह मक्कार हसी  
 य चचल आगें गरबती  
 यह बरमान खुगी  
 यह मेरा महाजन है ।  
 गादा में दिय गय ऋण का  
 भुगतान चाहता है ।

यह हनाश, हताग  
 यह मिर पीटनी तम्बीर किसकी है ?  
 यह हाथों म मिर थामे  
 य चेहर पर भुका गाम  
 य थकी हूँ जजर टागें  
 यह किरान का परचून दूकानदार है ।  
 महान भर उधार दिये गय सामान का  
 भुगतान मागता है ।

य मूरतें  
 य शक्लें  
 य तस्वीरें  
 मुझे घेर रही हैं ।  
 मुझे दवाच रही हैं ॥  
 मुझे गिरफ्त म ल रही हैं ॥॥  
 आर सूरतें ।  
 आर गकलें ॥  
 और तस्वीरें ॥॥  
 एन क गद एन  
 एक से अनक

इन सबसे घिरी है मेरी सूरत  
दूटत हुए शिताब-मी  
जाल म छत्पटान बचूतर-मी  
लगडाते हुए हरिण मी ।

यह मामूम मानूम  
यह उतरी उतरी सूरत निमनी है ?  
यह पुछी हुई चमक  
ये नुचे हुए सपना की दमक  
यह हार हुए जीवन की खनक  
यह मेरी पत्नी है ।  
वासी अरमान लिए  
सड रहा है इसका दिल  
इसक दिमाग म चीस रही हैं  
सपनो की भ्रूण हत्याए ।  
इस सूरत पर  
अतीत राग बनकर दिखर गया है  
इस देह म  
खोयी हुई सम्पत्ति का याद  
सुइयो की तरह चुभ रही है ।  
एक बार शिगुआ की तरह  
यह खुगिया की पतंग पकडने को  
वेतहाशा दौडी थी  
जमादिनी सी  
पर इसक होसला का  
इसक सकल्पा को  
इसक नजारा का  
एक मध्यवर्गीय परिवार

उमके धार वच्चे  
और परम्पराआ न मिलकर  
चुपचाप पी लिया ।

य निदाप निर्दोष  
य अत्राघ गहन किमकी है ?  
य महमी हुइ आठृतिया  
य टनी हुइ गनाठृतिया  
य जागी हुइ नवीन स्मृतिया

य दा वालिकाए  
मावन की घटा-सी  
य दो वालन  
नन जम गुनाव से ।

य गतान कलाकार  
य मर वच्चे हैं ।

इनके कमनार जिम्मा को  
कीमतेँ नीच रही ह

ननी देह म  
वतमान घुट रहा है

ननी आखा से  
घायल आगाए बाक रही हैं,

उनके मामन

यना हुआ भविष्य

मिर भुक्ताये गुममुम बठा है ।

यह कमनोर, कमजोर

यह निडचिली तम्बीर विमनी है ?

यह कटुनाहट

यह बडबडाहट  
 यह लडखडाहट  
 यह मेरी मा है ।  
 इसने जिन्दगी को  
 वीमारी समझ कर ग्रहण किया  
 विधि का विधान समझ कर जी लिया  
 इसके सामने खड होकर  
 भाग्य ने अनक बार  
 इसकी हसी उडायी है ।  
 एक जमाने म  
 यह तस्वीर भी बुनद थी  
 पर इसकी बुलदी  
 कल्पनाओं क हिमालय स फिमलकर  
 चकनाचूर हो गयी ।  
 आज इसकी आत्मा म  
 अनेक घाव रिस रहे हैं  
 इसक अतीत मे  
 अनेक साप रेंग रहे हैं  
 इसक मन पर  
 क्षोभ का एक अशात बादल फला हुआ हे ।  
 यह तस्वीर  
 अपने अतिम कगारो पर खडी हुई  
 पिछले पचहत्तर कगारो पर  
 घणा के साथ थूक रही है ।  
 इस तस्वीर का  
 अब एक ही विश्वास है  
 नूय । नूय ।। नूय।।।





## कुछ व्यंग्य-कविताएँ

•

१ बिना पढ़े ही !

हम टी० एम० एलियट में  
मसीहा दीखता है  
सात्र का अस्तित्ववाद  
हमारे मस्तक में है  
आल्फ़र कामू और अन्य  
हमारी वन प्रक में है ।

२ ईश्वर जाने क्या !

हम बीटनिको में प्यार है  
एलेन गिम्बग  
हमारे गले का हार है  
जाज संगीत के हम भक्त हैं  
शेष में विरक्त हैं ।

३ हमारा फ़शन !

सिगरेट के गोलाकार छला में  
आओ लारस की चचा कर  
आदमी और औरत को  
आवरणों से नगा कर  
डिस्कट की जिदगी का  
श्रद्धाजलि अर्पित कर  
हमारा नारा -  
अश्लीलता शब्द  
काश में हटाया जाय । '

४ यह कल्पना !

यह उदास शाम  
मारिजुआना खाकर आयी है !  
(नाट-गुना है मारिजुआना  
वाइ मादक पदार्थ है !)

५ यह अनास्था !

विद्युत् से जगमगात  
आलीशान कमरो मे  
हाटला व काफी-हाउमा म  
हमारे सपनो की माम  
घुट रही है  
अनध्याही आम्ब्या  
लुट रही है  
हम मृत्यु के पथिक हैं !  
हम मृत्यु व पथिक हैं ! !

६ 'अ' से हमारा स्नेह !

गद्य मे हम अगद्य है  
पद्य मे हम अपद्य हैं,  
कथा मे हम अकथा है  
पाठना के लिए व्यया हैं  
(बुद्धि म हम अनुद्धि हैं  
अथ म हम अनथ हैं !)

७ हमारा ध्यत्किरव !

हमारे रक्त म  
भूखा पीनी  
दिगम्बर पीढी,

अगरों का ।। / ६१

तथा नगी पीन्ती  
के कीटाणु रग रह है  
वे हमार  
टेरलिन क परिधानो क नीचे  
सुरक्षित है ।

८ यह मसोहाई !  
ओ लोगो !  
मजूर है हम  
बिना शूली क नास बिया जाना  
अब पडेगा तुम्ह  
युग क यीशु क रूप म हम स्वीकारना ।

९ यह अत मे एक वक्तव्य !  
लिखते है वक्तव्य अत म  
दते खुद का स्वय वधाई  
(रघुकुल रीति सदा चलि आई)  
कितनी है यह सरल जिन्दगी  
कितनी है सस्ती कविताई  
अखबारो म मिली छपाई  
(पाठक गण के समझ न आयी !)  
इसमे किसका दोष गुसाई ?  
आलोचक ने लिखी सफाई  
कलम तोडकर लिखी दुहाई  
जय जय भाई !  
जय जय भाई ! '

•

## परम्परा और हम

●  
यह सत्य है कि हमारे पूवजा ने  
समय की धारा पर  
अनेक कीर्तिवान जलयाना के  
लगर स्थापित किये थे  
कि उन्हाने अपने यौवन को  
हिमालयी बुलदी दी थी  
कि उन्होन जीवन की पुस्तक मे  
अनेक नये पृष्ठ जोड थे,  
कि वे अनेक  
नय अब्याया के कृतिकार थे ।

यह सत्य है कि हमारे पूवजो न  
अपने पला का  
सगीत क धागा म गूथा था,  
कि उन्हाने समय के पत्तो म  
उडाने भरी थी  
कि उन्हाने रेत के ढर पर  
घरींदा की रचना की थी ।  
यह सत्य है,  
नगा सत्य ।

लेकिन यह सत्य नहीं  
कि हमार पूवज  
हम से अधिक गतिवान  
बलवान  
तथा ज्योतिष्मान् थे ।

हमारे पूवजो न  
अपन पूवजो की

सीमाओं का विस्तार किया  
आज हम  
उनकी सीमाएँ विस्तार रहे हैं ।

हमारे पूवजा की चतना में  
अपने पूवजों की  
शताब्दियाँ बसी हुई थीं  
आज हमारी चेतना में  
हमारे पूवजों की  
शताब्दियाँ बसी हुई हैं ।

हमारे पूवजा ने  
प्रागतिहासिक अनुभूतियों के खण्डहरों पर  
अपनी अनुभूतियों के घर बनाये थे  
हम उनकी मध्यकालीन अनुभूतियों पर  
आधुनिकता के प्रामाण्य की  
रचना कर रहे हैं ।

वीहड़ जंगल की पगडडियाँ पर  
हमारे पूवजों के पद चिह्न  
बलगाडियाँ ने अंकित किये  
उन बलगाडियों के पद चिह्नों पर  
हमारी डी लक्स बस दौड़ रही है ।

हमारे पूवजा ने  
आकाश के शून्य में  
नक्षत्रों की स्थापनाएँ की  
आज हमारे अंतरिक्ष यान  
उन नक्षत्रों में

आदमी को स्थापित कर रहे हैं ।

हमारे पूवजो ने  
जितने क्षेत्रो की खोज की  
उन सभी क्षेत्रो मे  
स्थापित कर रह हैं हम  
प्रकाश-स्तम्भ  
हमारे पूवजो द्वारा निर्मित  
सभी दरवाजो पर  
हमारी नयी सम्भावनाए  
दे रही हैं दस्तकें ।  
इसलिए यह भूठ है  
कि हम अपने प्रगतिशील पूवजो के  
पिछुटे हुए उत्तराधिकारी हैं  
हमार लिए यह स्वीकृति होगी  
हमारी आत्म हत्या  
जवकि हम साहम के साथ  
जी रहे हैं  
और जीना जानत भी हैं ।

हर गताब्दी मे  
एक नया सूरज चमकता है  
एक पुराना सूरज भस्त होता है ।  
आज हमारी शताब्दी का सूरज  
अपनी दोपहरी प्रखरता के साथ  
तप रहा है  
दहन रहा है  
—वन के सूरज की प्रतीभा म

जो इससे अधिक  
बलवान  
और ज्यादामान् होगा ।



## तुम्हारी याद में



एक अजीब सूनेपन ने  
मरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को  
अपनी बाहुओं में ममेट लिया है।

कि आज इस मकान के  
हर कोने में  
खामाशियां भटक रही हैं,  
अपने परिचित स्थानों पर  
एक लावारिस सनाटा  
गर्दन लटकाये ऊध रहा है।

कि तुम्हारे सपनों में मोयी हुई  
मेरी चेतना  
दूरियां को भी समीपता  
समझन का भ्रम कर रही है।  
आज यह स्पष्ट हो गया है कि  
तुम्हारे बिना  
मैं मैं नहीं हूँ।

पता नहीं इस दूरी ने  
तुम्हारे मामूली मन को  
परेशान किया या नहीं—  
पर इन परेशानियों ने  
मुझे तो बुरी तरह  
परेशान कर डाला है।



मन आज गाने का बेचैन है।  
गीता की नदियां उमड़ गीं,



कविता के क्षरन बहग ।  
यह तुम ही तो हा  
जिस में अपने गीता म गा रहा हू ।

वात जो लिखता हू  
ईमानदारी से लिखता हू ।  
तुम्हारे और मेरे बीच  
प्रवचनाओं और रहस्या का  
कोई स्थान नहीं  
क्योंकि मैं कभी तुम से  
अधूरा प्यार नहीं किया ।

जो वात  
अतस्तल की गहराई से निबलती है  
उसम अलकारों की क्या जरूरत है ?  
उपमाओं का क्या स्थान है ?  
छंदा का क्या अर्थ है ?  
तुम्हारे और मेरे बीच  
कृत्रिमता का कोई पर्दा नहीं  
क्योंकि मैंने तुमसे  
दिल से प्यार किया है  
दिमाग से नहीं ।



तुम्हारी आखों को शराबी क्या कहू ?  
तुम्हारे तन को गुलाबी कहना भी व्यर्थ है ।  
तुम्हारे सोने जैसे बालों को  
रेशम की उपमा देते-देते

मैं बहुत बहक चुका हूँ ।

अब मैं तुम्हारे शरीर का दीपक न कहूँगा  
और तुम्हारे रूप को  
दीपक में प्रज्ज्वलित  
दीप शिखा भी नहीं समझूँगा ।

यह सब भूठ है  
कि तुम्हारे गालों और फूलों में  
कोई समानता है  
कि तुम्हारी आँखों में  
किमी नौली भील की  
भिलमिलाती परछाईयाँ हैं ।

मुझे अफसोस है कि अब तक  
मैं तुम्हें भूटे शब्द जाल में  
बाधता रहा जकड़ता रहा ।  
अब मैं यह समझ गया हूँ  
कि तुम केवल 'तुम' हो  
और तुम्हारी समानता  
दुनियाँ की  
किमी भी दूसरी वस्तु से नहीं ।

भावनाओं की तरंगों में बहना  
मेरे मन की दुबलता है ।  
मेरी एक कमजोरी यह भी है  
कि मैं यह जानता हूँ  
कि मेरी ये भावनाएँ  
तुम्हारी समझ का गति से परे हैं ।

लविन इन सबसे ऊपर है तुम्हारा प्यार !  
 तुम्हारी निष्कपट सरलता !  
 तुमने तो अपने  
 व्यक्तित्व को ही  
 मेरे व्यक्तित्व में  
 समाहित कर दिया है ।  
 इससे बढ़कर मैं  
 तुम से क्या आशा रखता था ?  
 भरी कलम की यह वक्चास  
 समझने की तुम्हें क्या जरूरत है ?  
 तुम्हारा तो सारा अस्तित्व ही  
 मुझमें एकात्म होकर  
 सतह से बहुत नीचे  
 गहरा उतर आया है,  
 मेरी ये खोखली भावनाएँ तो  
 सतह के ऊपर शोर मचाती लहर हैं !



## मोह भग

मुझे याद है ।

मुझे याद है । ।

तुमने मुझे सँपे थे

विले हुए गुलाब

और रगीन गुलदस्त ।

तुम्हारे चेहर के चमकदार गीगे म

देखी थी मैंने अपनी आकृति ।

तुमने मुझम खोजा था

कुछ सगीत भग मपना

और मैंने तुम्हारी आखो म

देखी थी अपनी परछाया ।

मुझे याद है ।

मुझे याद है । ।

भर प्यार ।

अब कहा चने गय

वे गुनाम

वे गुलदस्त

व गीगे ?

गुनाम की जाह गूगी खामागी ।

रगान गुनगुना की जगह उदाम विश्राम ।

चमकदार गीगा की जगह चकनाचूर आदग ।

मरे प्यार

अब तुम मुझे

य क्या नौप रही हो ?

यह लुटा हुआ

घुटा हुआ बनमा

ता तुम्हारा ययाय नहा था !

अ १०१ का किशक / ७५

उस महकते हुए  
 मस्ती में बहकत एक  
 अनीत का क्या हा गया ?  
 अब तो तुम्हें देख कर  
 भविष्य की कल्पना करन से ही  
 ममूची आत्मा सिहर उठती है ।  
 किसन की यथाय की यह नगा हत्या ?  
 कौन है इस प्रच्छन्न पडयत्र का मूत्रघार ?  
 ——में ?

या स्वयं तुम ?  
 या यह पहरेदार व्यवस्था ?

मेरे प्राण ।  
 आज तुम मेरे सामन  
 एक प्रश्न चिह्न सी खड़ी हो  
 तुम प्रश्न चिह्न  
 अनीत पर ।  
 बतमान ॥  
 भविष्य पर ॥॥

तुम मेरे प्रणय की जिज्ञासा थी  
 वसे बन गयी तुम एक पहेली ?  
 क्या पता  
 तुम नीरवता की चीख मान रह जाग्रा ।

मेरे प्यार ।  
 अब मुझे लगाव नहीं है  
 तुम्हारे फून जड जूड से  
 नीली थोली मी आखी से

पधरो का विद्दीह / ७६

रेशमी केश राशि से,  
गदरायी देह से,  
मलमली अगडाइया से,  
गरमायी सासो स ।

अब यह सब कुछ  
तुम्हारे और मेरे बीच  
कल्पना मात्र रह गया है ।

जा कुछ यथाथ बचा है,  
वह है

एक कुरेदा हुआ सपना ।

एक मसला हुआ गीत ।

एक वासी अरमान ।

एक फासी-लगी आत्मा ।

एक गला घोटा हुआ छन्द ।

एक मुरझाया हुआ

लावारिस सगीत ।

●

## पतञ्जलि का शृंगार ।

•  
तू घना पानना का शृंगार कर  
घोर मुक्त घना योरागिया का जका म  
गिगार टाता ।

रामागिया का गम म गम  
यू ता मा टर  
कि भागुमा क वाग्या भटा तात ।

मेरे साथी ।  
रामागिया त भाज तत  
रिगी भी समस्या ता हल उही गाजा  
पूयता न भाज तत  
रिगी भी जिग्या क दत वा नही पटना  
रिसी भी वाक्त वा नहा वाटा ।

मेरे वधु ।  
हृदय की वीणा पर  
अपनी अगुलिया का यू प्रहार कर  
कि राम राम म धनिया विखर जाय  
लय की नदी म नहाकर  
गदो का इतन ऊच स्वरो म आवाज द  
कि दूर वादियो म भटवती  
बहार लौट आय  
और तरे देग म आकर  
रोशनी का रय धम जाय ।

मेरे साथी ।  
यदि पुकारना है  
तो गीतो के भूकम्पा को पुकार  
कविताआ क लावा को पुकार

लेखनी के ज्वार-भाटो को पुकार  
 जिनके भीषण उद्घापा से  
 अंधेरो के साये पहरा छाडकर भाग जाय  
 फिर तुम अपन पतभचो का श्रु गार कर मको  
 और मैं अपनी वीरानिया की जुल्फा म  
 मितारे टाक सकू ।



गम के समुद्र म इस प्रकार  
 उतर जान से क्या होगा ?  
 समुद्र मे डूबनवालो ने  
 किमी भी मजिल का उद्वार नही किया ।

तुम्हार गम के समुद्र म उतर जाने पर  
 आजादी के दीवान  
 तोपा की भट्टी म भुनते रहेंग  
 वियतनाम मे सुहाग के वाग उजडत जायेंगे  
 नन्ही मिलवागिया  
 मगान गनो की बीछारा मे माती रहेंगी  
 और पाटगालाए,  
 गिरजाघर  
 डाक घर,  
 तथा रेलव स्टान  
 हवाई हमला के पटो म घुमत जायेंगे ।

मेरे मायी ।

इम गम के कपट का पदा हटा  
 घोर अपन भीतर गाव हुए आदमी मे वह  
 कि वह अपन हाठो पर



घणा और लिप्सा के विरोध में  
 इन्कलाब के नारे बुलाय  
 जिनके भीषण उद्घोषों से  
 निहत्या पर वार करने वाले  
 हथियारों को लूटकर मार जाय ।  
 और अधेरो के साथे पहरे छोड़ कर भाग जाय ।

फिर तुम अपने पतझड़ों का श्रु गार कर मका  
 और मैं अपनी वीरानिया की जुल्फों में  
 सितारे टाक सकूँ ।



तपस्वियों की तरह  
 हाथ पर हाथ धरकर  
 पालथी मारकर समाधि लगाकर  
 'ओ३म् शांति आ३म् शांति' के—  
 पाठ करने से क्या होगा ?

शांति और तपस्या का अर्थ  
 केवल आदमी समझते हैं !

भेरे बधु !  
 तेरा अणु-धम न बनाने की  
 शांति प्रतिज्ञा का गला  
 चीन का पंचशील दबाता जा रहा है  
 तेरी विश्व-बन्धुत्व की तपस्या को  
 ताकद समझौता मिटाता जा रहा है  
 और दूर सरहदों पर  
 नयी बनी बरखा तथा खाइयों से

गानों की धीमी आवाज माफ मुनायी द रही है  
 घ्राट म छिपी तापा के मुन्ना म  
 अभी अभी भर वान्द की सहाय  
 हवा म मडरा रही है  
 और कुछ वायुयान  
 हमारे आकाश को मापन की तयारी म  
 तन पीते जा रह हैं ।

मेरे मायी ।

तागद-ममभौता हा या पचगील—  
 दास्ती हा सकती है इसाना मे  
 हैवानियत का  
 इलाज केवल एक है—

—मून

मौत

और विजय ।

ताकि तू अपन पतभडा का शृ गार कर सके  
 और मैं अपनी वीरानिया की जुटपा म  
 सितार टाक सकू ।

•

अकमप्यता की चादर म सिमट कर  
 यू जिन्दगी काट लेन स क्या हागा ?

उत्तम चहग न

बहा भी वीराना म फून नहीं मजाय

मुव हूण मन्ना न

किमी भी अपमान के कतक या नहीं घाया ।

अशरों का वि 18 / ८१

मर वधु !

तर उदासी में इस प्रकार घुटन रहन स

तरे ही घर में डाके पडत रहग

भूख की चुडल

तरे भाई-बहिनो का जवानिया का

निगलती रहेगी

फसलो का सौदय

गोदामो की काल-कोटरिया में सन्ता रहगा

देश की अनेक सिसकियो पर

दो चार मुम्कान बिखरती रहगी

और सरकारी मेजा पर पड एकर आकर

सस्कृत नाटको के

विदूषको का सफत अभिनय करत हुए

खाखली बनावटी और

भूठी हसी हमते रहेगे !

मरे साथी !

मेरे वधु !

अगर तुम्हे

अपने पतभडो का शृ गार करना है—

अगर मुझे अपनी वारानियो की जुल्फा में

सितारा को टाकना है—

तो हम एक शक्तिशाली मोर्चा बनाना हागा

जिससे

अजगरा के घेरो में बंद पडे फूल

आजाद हो सकगे

खाई हुई आखा में

काजल चमक सकेगा

अपरो का विोह / ८२

सूने मस्तक पर  
 विदी मवर सवेगी,  
 लुटी हुड मुस्काना का  
 उद्धार हो मवेगा  
 नख्खडाती हुई आस्थाओ तक  
 नयी मुग्रह की रोशनी पहुच मवेगी  
 और रावण के रथो मे जकटी हुड  
 साधनाओ की सीताए  
 मुक्त हो मरुगी ।

और सबसे बडी बात—  
 मेरे वऱु ।  
 मेरे साथी ।

तेर पतझडा का श्रु गार हा सवेगा  
 और मेरी वीरानियो की जुल्फो म  
 सितारे टक सकग ।

## पराजितो का वक्तव्य



हम अजर हैं अमर हैं अजेय हैं  
क्योंकि हम किसी स सघप ही नहीं करते ।

हम इस खूबसूरत विश्व के  
रचयिता की सराहना करते हैं  
तथा हमारे खुदा ने  
जो हसीन जिन्दगी  
हमें जीने के लिए दी है  
उसके लिए हम उसका प्रति कृतन हैं ।

विप्लव अमन  
क्रांति परिवर्तन,  
तथा बगावत —  
ये परिभाषाएँ आतंकवादियों की हैं  
जिन्हें हम बहुत ही हीन दृष्टि से देखते हैं ।  
हमारा पूरा विश्वास  
हर स्थिति के बतमान रहने में है ।  
इस बतमान जिन्दगी के लिए  
हम अपने खुदा का लाख शुक करते हैं  
और कसम खाते हैं  
कि हर नाजुक समय में  
हम इस जिन्दगी को जियेंगे  
जहर और अमृत के घूटा को  
सहज भाव से पियेंगे ।  
हम इस खूबसूरत जिन्दगी को  
सवारण दुलारेंगे  
तथा इसे निष्काम भाव से जियेंगे ।  
हम समदर्शी सत हैं

गांधी और विनोबा के भक्त हैं  
गौतम और महावीर के अनुयायी हैं,  
मुक्तराज और मीरा के राही हैं ।

नपालियन और भगतसिंह  
सुभाष और ट्रॉम्बल  
लेनिन और लुमुम्बा  
के नामों से भी परिचित हैं ।  
उनके सघर्षों की दाशनिक व्याख्या में  
घटा भाषण द सकते हैं,  
पर उन जैसी खून-खराबी  
हम कर भी तो कैसे सकते हैं ।

दिल से हम अधीर हैं,  
दिमाग से हम वीर हैं,  
स्वभाव हमारा गम्भीर है ।  
मारते हम मीर हैं— (वातों में) ।  
मत्ता सम्पन्न पत्थरो की भी  
चरण-कमला की वन्दना करते हैं  
हम न तो विसी को डरते हैं  
और न हम विसी से डरते हैं ।  
केवल बात के घनी हैं,  
शब्दा के गहगाह हैं,  
वातों में ही मारते हैं  
वानों में ही मरते हैं ।  
साधना से हम दूर हैं  
पर प्रथम पवित्र में रहने को ही  
मित्र तथा दिमाग में मजबूर हैं ।

जिसके लिए  
 हम नित नयी याजनाए बनाने हैं  
 वस हमीन जिन्दगी के  
 गीत गुनगुनाते हैं ।  
 सत्ता के मन्दिरों में  
 दीपक जलाते हैं  
 तथा प्रभुआ से वरदान पाए व  
 सपने सजाते हैं ।

हम न जमाने से कुछ गिला हूँ  
 न कोई वक्त का ही कुसूर है ।  
 जो कुछ खुदा ने दे दिया है  
 वह सब हम मजूर है  
 वह सब हमें मजूर है ।

आ हमारे आका ।  
 ओ हमारे मालिक ।  
 बस इतना वरदान दे दे  
 कि हमारा अस्तित्व बना रहे  
 और हम तरे द्वारा दी हुई  
 इस हमीन जिन्दगी को जीने रह ।  
 हम इसे प्यार करने की कसम खाते हैं  
 इसकी पूजा करने की कसम खाते हैं  
 इसे न बदलने की कसम खाते हैं ।

बादल बरसें आले गिर  
 ज्वालामुखी फट पहाड़ गिरें  
 विजलिया बढकें धरती घडक  
 भूकम्प नाच या आकाश गिरे—

प्रकारों का विद्रोह / ८६

हम कभी भी विचलित न होंगे ।  
हम कभी भी चिंतित न होंगे ।

य सब तो खुदा के दूत हैं  
जगत में जीव के लिए  
माया के बंधन हैं ।  
इन सबका स्वागत है ।  
विवाह शादियों की तरह  
इन सबका स्वागत है ।

हम हर स्थिति में  
हर स्थान पर  
भारतीय संस्कृति के गीत गाएंगे  
रामायण और महाभारत का  
गुन-पाठ करेंगे  
तथा गीता के अठारह अध्यायों का  
मन्त्रों की तरह रटने जायेंगे ।

हम हम हमीन जिन्दगी से प्यार है  
हम हम खूबसूरत जिन्दगी से प्यार है  
आ हमारा प्रभु ।  
ओ हमारा आवा  
तुम्हें गत गत नमस्कार है !  
तुम्हें गत गत नमस्कार है !!



## आत्म-हत्या पर्याय नारी



आत्म-हत्या और नारी  
दा समान धर्मी पर्याय है  
मेरे इस देश भारत म ।  
आत्म-हत्या वनाम नारी  
नारी पर्याय आत्म-हत्या ।

नारी  
जिसे गगा-सी  
पवित्र बताया जाता है  
मेरे इस देश भारत म  
नारी  
जिसका सतीत्व  
हिमालय से ऊचा बताया जाता है  
मेरे इस देश भारत म ।

आत्म-हत्या वनाम गगा ।  
आत्म हत्या पर्याय हिमालय ।  
आत्म हत्याआ के माध्यम हैं—  
स्टोव और चूल्हे  
कुए और नदिया  
ट्रन और बसें ।

मेरा यह देश भारत  
गगा का पुजारी ।  
हिमालय का बेटा !  
आत्म हत्या को  
सही अथ म नही स्वीकारता  
क्योंकि आत्म हत्या का  
सही अथ है नारी

नागे का मही अथ है गगा  
 नारी के दूमे पर्याय हैं  
 सीता गधा मावित्री,  
 इमलिए मरा यह दग भारत  
 आत्म-हत्या का  
 'दुघटना' कहता है ।

म्दाव म जनना  
 एक दुघटना ।  
 कुए मे कूदना  
 एक दुघटना ।  
 टेन से कटना  
 एक दुघटना ।  
 नदी म डूबना  
 एक दुघटना  
 नारी का पर्याय  
 एक दुघटना ।

फिर क्याए पढी जाती ह  
 मुनती हैं परम्पराए  
 हाया मे मालाए घुमाती हु  
 परम्पराए  
 जा आत्म हत्याआ की माए हैं ।  
 क्याए हानी ह  
 सीता क प्रेम की अनयता पर  
 सीता  
 जो आज भी म्दाव म जन जन क  
 अग्नि-परीक्षा द रही है ।

अगरो का बिगोह / ८६

क्याए होती है  
राधा की अनुरक्ति पर,  
राधा,  
जिस आज ही उसक घरवाले न  
कालिंदी म डूब मरन के लिए  
घर स निकाल दिया है ।

क्याए होती है  
सावित्री के सतीत्व पर  
सावित्री  
जो आज भी  
किसी तेज स्पीड से भागती हुई  
ट्रेन से कटकर  
अपने सत्यवान् को खोजने  
यम लोक पहुच रही है ।

आत्म हत्या  
पर्याय नारी ।  
नारी  
पर्याय आत्म हत्या ।



ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !

•

आ मेरे उखडते हुए विश्वास !  
ओ अपनी धुरी से छूटत हुए नभत्र !  
तू रज भी जा,  
तू थम भी जा,  
अधूरी बात बाकी है,  
अधेरी रात बाकी है !

नत-मस्तक हैं अनक  
अधखिली आशाए  
सजल नयन लिए  
रास्ता पर प्रिछी हैं  
अध पकी आस्थाए

कितनी प्यामी मुझों की  
अध-भुदी पलके  
प्रनीता म पयरा रही हैं  
कितने गगनचुम्बी सपनों की  
अध-मरी प्रेतात्माए  
पालान मे मडरा रही हैं !

आ मेरे उखडते हुए विश्वास !  
आ मेरे ढलत हुए सूरज !  
तू रज भी जा  
तू थम भी जा  
अधूरी बात बाकी है,  
अधेरी रात बाकी है !

ओ मेरे उखडते हुए विश्वास !  
क्या तू या हों

इच्छाओं का जफ बनने दगा ?  
 प्यार के गीता का सज बनने दगा ?  
 रगिन बहारों का जज बनने दगा ?

क्या तू या ही  
 बच्चों के हाँठा पर हसी का मूखन ळगा ।  
 इंसानियत के पागा म गीदरा का भूकन दगा ?  
 वसतो की लागी पर गिद्धा का धूमन दगा ?  
 ओ मेरे उखडत हुए विश्वास  
 ओ मेरे राख बनते हुए ज्वालामुखी ।  
 तू रक भी जा  
 तू थम भी जा  
 अत्रुरी वात वाकी है ।  
 अधेरी रात वाका है ।

•

ओ मेरे उखडत हुए विश्वास ।  
 क्या तू सिसकिया मुन मुन कर भी  
 यह समचता रहगा  
 कि तुमन कुछ नही सुना ?  
 क्या तू अस्मता का विकता देखकर भी  
 यह साचता रहगा  
 कि तुमन कुछ नही देखा ?  
 क्या तू पराजय का हर सद्भ से जुडा पाकर भी  
 यह मानता रहेगा  
 कि हमारा पराजय स कोई रिश्ता नही ?  
 क्या तू किरगा का कालिख लगने दगा ?  
 क्या तू चार अधेरी को

रोगिणी का टगन दगा ?

आगिर सिताती पार  
आत्म प्रवचनाया का गने तगायगा ।

आगिर सिताती पार  
निन व गपे प्रयाग म  
दूध घाय गया का भुत्तायगा ?

आगिर सिताती पार  
का वायर गताफमिया का  
दुतायगा दुतायगा ?

आ मर उगहन दूण सिवाग ।

आ मरे भाटा पाता दूण जार ।

तू रत भी जा,

तू थम भी जा,

अधूरी वात बाकी है ।

अधेरी गा बाकी है ।



आ मर उगटा दूण सिवाग ।

मर रत की रत तादनी

बनार्ग त पुकारा है,

अधेरी गुताया म मरकता

रागनी त पुकारा है ।

अधर गावा की सीर्ग म

मागुम बलिर्ग का अरग है,

अधर दूर नर उन कागुत पार

गागुत का अरग है

इच्छाया का उफ बनने दगा ?  
प्यार र गीता का सन बनने दगा ?  
रगीत बहारा का जल बनने दगा ?

क्या तू यो ही  
बच्चो के होठा पर हसी का सूखने दगा ?  
इसानियत के रागा म गोदडा का भूवन दगा ?  
बसनो की लागत पर गिद्धा का घूमने दगा ?  
ओ मेरे उखडत हुए विश्वास  
ओ मेरे राख बनत हुए ज्वालामुखी !  
तू ख भी जा  
तू थम भी जा  
अधूरी बात बाकी है ।  
अधेरी रात बाकी है !

•

आ मर उखडत हुए विश्वास !  
क्या तू सिसकिया सुन सुन कर भी  
यह समझता रहगा  
कि तुमने कुछ नहीं सुना ?  
क्या तू अस्मतो का विकता देखकर भी  
यह साचता रहगा  
कि तुमने कुछ नहीं देखा ?  
क्या तू पराजय को हर सदन से जुडा पाकर भी  
यह मानता रहगा  
कि हमारा पराजय से कोई रिश्ता नहीं ?  
क्या तू किरण का कालिल लगने दगा ?  
क्या तू चार अधेगे को

आरो का किने / ६२

रोगिनी का ठगन दगा ?

आखिर कितनी बार  
आत्म प्रवचनाआ का गले लगायेगा ?  
आखिर कितनी बार  
दिन के मफेक प्रकाण म  
दूध घाय मत्या का भुठनायगा ?  
आखिर कितनी बार  
इन कायर गततफहमिया का  
दुलारगा दुहरायगा ?

आ मेर उखडत हुए विश्वास ।  
आ मरे भाटा जनत हुए ज्वार ।  
तू रक भी जा,  
तू थम भी जा  
अधूरी बात बाकी है ।  
अधेरी गत बाकी है ।

●

आ मेर उखडते हुए विश्वास ।  
मेर देण की दम-तोडती  
बहारा न पुकारा है  
अधेरी गुफाआ म भटकती  
रागिनी न पुकारा है ।

उधर मापो की फीजा ने  
मामूम बलियों का घेरा है  
दधर हर नये बन कानून पर  
दौलत का पहरा है

दशरों का विगह / ६३



इच्छाएँ तो यह बान लगा ?  
प्यार के गीता का मर बना देगा ?  
रगौन बहाएँ तो जल बना लगा ?

क्या तू या है  
बच्चा के हाथ पर हमी का मूँचन लगा  
दुःखानियत के प्राणों में गाँडा का मूँचन लगा ?  
वगता का लाना पर गिद्धा का घूमन देगा ?  
आ मेर उमड़न हुए निःशाम  
आ मेर राग बान हुए ज्वालामुखा ।  
तू रग भी जा  
तू थम भी जा  
अधूरी बात बानी है ।  
अधरी रात बानी है ।

•  
आ मेर उमड़न हुए निःशाम ।  
क्या तू सिसनिया मुन मुन कर भी  
यह समझता रहेगा  
कि तुमने कुछ नहीं सुना ?  
क्या तू अम्मता का रिक्ता देखकर भी  
यह सोचता रहेगा  
कि तुमने कुछ नहीं देखा ?  
क्या तू पराजय का हर सन्दभ से जुड़ा पाकर भी  
यह मानता रहेगा  
कि हमारा पराजय से कोई रिश्ता नहीं ?  
क्या तू किरणा को कालिख लगने देगा ?  
क्या तू चोर अधेरे को

रोगिनी को ठगन दगा ?

आखिर कितनी बार  
आम प्रवचनाओं को गले लगायगा ?

आखिर कितनी बार  
दिन के मफेद प्रकाश में  
दूध घाय मत्स्या का भुलनायगा ?

आखिर कितनी बार  
इन कायर गननदहमियों को  
दुलारगा दुहगायगा ?

आ मरे उखड़ने हुए त्रिद्वाम ।

आ मरे भाटा वनत हुए ज्वार ।

तू मर भी जा

तू यम भी जा

अधूरी जान बाकी है ।

अधेरी गत बाकी है ।

●

आ मेर उखड़ने हुए त्रिद्वाम ।

मेर देग की म-नाइती

बहारा ने पुवारा है

अधेरी गुफाआ म भटनी

रोगिनी न पुवारा है ।

ज्वर मापा की फौजा ने

मागूम कतियों का घेरा है

दधर हर नय वन कानून पर

दीलत का पहरा है

घनगों का किगाह / ९३

मेरे इस देश के हर साधु में  
एक शतान का चेहरा है ।

हर सुनह के पीछे पड़ी हुई  
एक वैशरम दापहर है  
कि जिसका अत साज है  
आज हर नयी फसल  
धान को जन्म देने के बाद भी  
वाश है ।

ओ मेरे उखडते हुए विश्वाम ।  
ओ मेरे थके हुए वादल ।  
तू एक भी जा,  
तू थम भी जा  
अधूरी घात बाकी है,  
अधेरी रात बाकी है ।

●  
ओ मेरे उखडते हुए विश्वाम ।  
मेरे इस देश में  
हर वैईमान निगाह  
ईमानदारी का चश्मा चढाये है  
मजिल तक जाने वाली हर राह  
शाम से सिर झुकाये है  
हर देवता के शीश पर  
एक दत्य अब आसन लगाय है ।  
आज हर नारा वदनाम हो गया है  
हर कोलाहल का अथ खो गया है  
यह बूढा समय

अनर भूटे वायदों को टो गया है ।  
आ मरे उखडते हुए विश्वाम ।  
ओ मेरे सिमटते हुए चाद ।  
तू एक भी जा,  
तू थम भी जा,  
अधूरी बात बाकी है,  
अधेरी रात बाकी है  
अभी तू ख ।  
अभी तू थम ।

●

# अंतिम पृष्ठ

## अशब्द आभार

- जीवत कवि स्वतंत्र चर्चा समीक्षक तथा माध्यम' के यशस्वी सम्पादक ज्ञानगुण राव के प्रति प्रारम्भ के लिए ।
- कवि और गीतकार रामनरेश मानी के प्रति आवरण पृष्ठ और स्वरूप के लिए ।

प्र

।हित्य]

।) से ।

।श्मक लेख

भी ।

।ुद्य सक्वनों

म जानीय

आजकल

मप भारती

म रचनाए

वनप्र रूप म]

। पर

प दृष्टि ।